اصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ ع ١١ ٦ ١٢

सब्र करो[223] यहां तक कि अल्लाह हुक्म फ़रमाए[224] और वोह सब से बेहतर हुक्म फ़रमाने वाला है[225]

اٰیاتها ١٢٣ | ١١ سُوْرَةُ هُوْدٍ مَّكِّيَّةٌ ٥٢ | رکوعاتها ١٠

सूरए हूद मक्किय्या है, इस में एक सो तेईस आयतें और दस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रहम वाला[1]

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۙ﴿١﴾

येह एक किताब है जिस की आयतें हिक्मत भरी हैं[2] फिर तफ़्सील की गई[3] हिक्मत वाले ख़बरदार की त़रफ़ से

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ۙ﴿٢﴾ وَّاَنِ

कि बन्दगी न करो मगर अल्लाह की बेशक मैं तुम्हारे लिये उस की त़रफ़ से डर और ख़ुशी सुनाने वाला हूं और येह कि

اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ

अपने रब से मुआ़फ़ी मांगो फिर उस की त़रफ़ तौबा करो तुम्हें बहुत अच्छा बरत्ना (फ़ाएदा) देगा[4] एक ठहराए

مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ۭ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ

वा'दे तक और हर फ़ज़ीलत वाले को[5] उस का फ़ज़्ल पहुंचाएगा[6] और अगर मुंह फेरो तो मैं तुम पर

223 : कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब और उन की ईज़ा पर 224 : मुश्रिकीन से क़िताल करने और किताबियों से जिज़्या लेने का। 225 : कि उस के हुक्म में ख़त़ा व ग़लत़ का एह़तिमाल नहीं और वोह बन्दों के असरार व मख़्फ़ी ह़ालात सब का जानने वाला है, उस का फ़ैसला दलील व गवाह का मोह़ताज नहीं। 1 : सूरए हूद मक्किय्या है ह़सन व इ़क्रिमा वग़ैरहुम मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि आयत "وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ" के सिवा बाक़ी तमाम सूरत मक्किय्या है। मक़ातिल ने कहा कि आयत "فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ" और "اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ" और "اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ" के इलावा तमाम सूरत मक्की है, इस में दस रुकूअ़ और एक सो तेईस आयतें और एक हज़ार छ[6] सो कलिमे और नव हज़ार पांच सो सरसठ ह़र्फ़ हैं। ह़दीस शरीफ़ में है : सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم हुज़ूर पर पीरी के आसार नुमूदार हो गए। फ़रमाया : मुझे सूरए हूद, सूरए वाक़िआ़, सूरए "عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ" और सूरए "اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ" ने बूढ़ा कर दिया। (ترمذی) ग़ालिबन येह इस वज्ह से फ़रमाया कि इन सूरतों में क़ियामत व बअ़्स व ह़िसाब व जन्नत व दोज़ख़ का ज़िक्र है। 2 : जैसा कि दूसरी आयत में इर्शाद हुवा : "تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ"। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि "اُحْكِمَتْ" के मा'ना येह हैं कि इन की नज़्म मोह़कम व उस्तुवार की गई। इस सूरत में मा'ना येह होंगे कि इस में नक़्स व ख़लल राह नहीं पा सकता वोह बिनाए मोह़कम है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि कोई किताब इन की नासिख़ नहीं जैसा कि येह दूसरी किताबों और शरीअ़तों की नासिख़ हैं। 3 : और सूरत सूरत और आयत आयत जुदा जुदा ज़िक्र की गईं या अ़लाह़दा अ़लाह़दा नाज़िल हुईं या अ़क़ाइद व अह़काम व मवाइ़ज़ व क़िसस और ग़ैबी ख़बरें इन में ब तफ़्सील बयान फ़रमाई गईं 4 : उ़म्रे दराज़ और ऐशे वसीअ़ व रिज़्क़े कसीर। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि इख़्लास के साथ तौबा व इस्तिग़्फ़ार करना दराज़िये उ़म्र व कशाइशे रिज़्क़ के लिये बेहतर अ़मल है। 5 : जिस ने दुन्या में आ'माले फ़ाज़िला किये हों और उस की त़ाआ़त व ह़सनात ज़ियादा हों 6 : उस को जन्नत में ब क़दरे आ'माल दरजात अ़त़ा फ़रमाएगा। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : आयत के मा'ना येह हैं कि जिस ने अल्लाह के लिये अ़मल किया, अल्लाह तआ़ला आयिन्दा के लिये उसे अ़मले नेक व त़ाअ़त की तौफ़ीक़ देता है।

www.dawateislami.net

عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ۝٣ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

बड़े दिन[7] के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ करता हूं तुम्हें अल्लाह ही की त़रफ़ फिरना है[8] और वोह हर शै पर

قَدِيْرٌ ۝٤ اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ؕ اَلَا

क़ादिर है[9] सुनो वोह अपने सीने दोहरे करते (मुंह छुपाते) हैं कि अल्लाह से पर्दा करें[10] सुनो

حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ

जिस वक़्त वोह अपने कपड़ों से सारा बदन ढांप लेते हैं उस वक़्त भी अल्लाह उन का छुपा और ज़ाहिर सब कुछ जानता है

اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٥

बेशक वोह दिलों की बात जानने वाला है

7 : या'नी रोज़े क़ियामत 8 : आख़िरत में वहां नेकियों और बदियों की जज़ा व सज़ा मिलेगी। 9 : दुन्या में रोज़ी देने पर भी, मौत देने पर भी, मौत के बा'द ज़िन्दा करने और सवाब व अ़ज़ाब पर भी। 10 **शाने नुज़ूल :** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : येह आयत अख़नस बिन शरीक़ के ह़क़ में नाज़िल हुई येह बहुत शीरीं गुफ़्तार शख़्स था, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के सामने आता तो बहुत ख़ुशामद की बातें करता और दिल में बुग़्ज़ो अ़दावत छुपाए रखता, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। मा'ना येह हैं कि वोह अपने सीनों में अ़दावत छुपाए रखते हैं जैसे कपड़े की तह में कोई चीज़ छुपाई जाती है, एक क़ौल येह है कि बा'ज़े मुनाफ़िक़ीन की आ़दत थी कि जब रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم का सामना होता तो सीना और पीठ झुकाते और सर नीचा करते चेहरा छुपा लेते ताकि उन्हें रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم देख न पाएं इस पर येह आयत नाज़िल हुई। बुख़ारी ने अफ़्राद में एक ह़दीस रिवायत की, कि मुसल्मान बौलो बराज़ व मुजामअ़त के वक़्त अपने बदन खोलने से शरमाते थे उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई कि अल्लाह से बन्दे का कोई ह़ाल छुपा ही नहीं है लिहाज़ा चाहिये कि वोह शरीअ़त की इजाज़तों पर आ़मिल रहे।

www.dawateislami.net

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا

और ज़मीन पर चलने वाला कोई[11] ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मए करम पर न हो[12] और जानता है कि कहां ठहरेगा[13]

وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٦ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ

और कहां सिपुर्द होगा[14] सब कुछ एक साफ़ बयान करने वाली किताब[15] में है और वोही है जिस ने आस्मानों और

الْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ

ज़मीन को छ[6] दिन में बनाया और उस का अ़र्श पानी पर था[16] कि तुम्हें आज़्माए[17] तुम में

اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَلَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ

किस का काम अच्छा है और अगर तुम फ़रमाओ कि बेशक तुम मरने के बा'द उठाए जाओगे

لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧ وَلَئِنْ اَخَّرْنَا

तो काफ़िर ज़रूर कहेंगे कि येह[18] तो नहीं मगर खुला जादू[19] और अगर हम उन से

عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِلٰٓى اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ؕ اَلَا يَوْمَ

अ़ज़ाब[20] कुछ गिनती की मुद्दत तक हटा दें तो ज़रूर कहेंगे किस चीज़ ने उसे रोका है[21] सुन लो जिस दिन

يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٨ ع

उन पर आएगा उन से फेरा न जाएगा और उन्हें घेर लेगा वोही अ़ज़ाब जिस की हंसी उड़ाते थे

وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَـُٔوْسٌ

और अगर हम आदमी को अपनी किसी रह़मत का मज़ा दें[22] फिर उसे उस से छीन लें ज़रूर वोह बड़ा ना उम्मीद

كَفُوْرٌ ۝٩ وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ

नाशुक्रा है[23] और अगर हम उसे ने'मत का मज़ा दें उस मुसीबत के बा'द जो उसे पहुंची तो ज़रूर कहेगा कि बुराइयां

11 : जानदार हो **12 :** या'नी वोह अपने फ़ज़्ल से हर जानदार के रिज़्क़ का कफ़ील है। **13 :** या'नी उस के जाए सुकूनत को जानता है। **14 :** सिपुर्द होने की जगह से या मदफ़न मुराद है या मकान या मौत या क़ब्र। **15 :** या'नी लौह़े मह़फ़ूज़ **16 :** या'नी अ़र्श के नीचे पानी के सिवा और कोई मख़्लूक़ न थी। इस से येह भी मा'लूम हुवा कि अ़र्श और पानी आस्मानों और ज़मीनों की पैदाइश से क़ब्ल पैदा फ़रमाए गए। **17 :** या'नी आस्मान व ज़मीन और इन की दरमियानी काएनात को पैदा किया जिस में तुम्हारे मनाफ़ेअ़ व मसालेह़ (भलाइयां) हैं ताकि तुम्हें आज़्माइश में डाले और ज़ाहिर हो कि कौन शुक्र गुज़ार, मुत्तक़ी, फ़रमां बरदार है और **18 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ जिस में मरने के बा'द उठाए जाने का बयान है येह **19 :** या'नी बातिल और धोका। **20 :** जिस का वा'दा किया है **21 :** वोह अ़ज़ाब क्यूं नाज़िल नहीं होता ? क्या देर है ? कुफ़्फ़ार का येह जल्दी करना बराहे तक्ज़ीब व इस्तिह़ज़ा है। **22 :** सिह़्हत व अम्न का या वुस्अ़ते रिज़्क़ व दौलत का **23 :** कि दोबारा उस ने'मत के पाने से मायूस हो जाता है और अल्लाह के फ़ज़्ल से अपनी उम्मीद क़त़्अ़ (ख़त्म) कर लेता है और सब्रो रिज़ा पर साबित नहीं रहता और गुज़श्ता ने'मत की नाशुक्री करता है।

www.dawateislami.net

السَّيِّاٰتُ عَنِّيْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ۙ﴿۱۰﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَمِلُوا

मुझ से दूर हुईं बेशक वोह ख़ुश होने वाला बड़ाई मारने वाला है[24] मगर जिन्हों ने सब्र किया और

الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿۱۱﴾ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ

अच्छे काम किये[25] उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है तो क्या जो वह्य तुम्हारी त़रफ़

مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَضَآئِقٌ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ

होती है उस में से कुछ तुम छोड़ दोगे और उस पर दिलतंग होगे[26] इस बिना पर कि वोह कहते हैं इन के साथ

كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

कोई ख़ज़ाना क्यूं न उतरा या इन के साथ कोई फ़िरिश्ता आता तुम तो डर सुनाने वाले हो[27] और अल्लाह हर चीज़ पर

وَّكِيْلٌ ؕ﴿۱۲﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ

मुह़ाफ़िज़ है क्या[28] येह कहते हैं कि इन्हों ने इसे जी से बना लिया तुम फ़रमाओ कि तुम ऐसी बनाई हुई दस सूरतें ले आओ[29]

وَّادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۳﴾ فَاِلَّمْ

और अल्लाह के सिवा जो मिल सकें[30] सब को बुला लो अगर सच्चे हो[31] तो ऐ मुसल्मानो

يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ

अगर वोह तुम्हारी इस बात का जवाब न दे सकें तो समझ लो कि वोह अल्लाह के इ़ल्म ही से उतरा है और येह कि उस के सिवा कोई सच्चा मा'बूद नहीं

فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۴﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ

तो क्या अब तुम मानोगे[32] जो दुन्या की ज़िन्दगी और आराइश चाहता हो[33] हम इस में

24 : बजाए शुक्र गुज़ार होने और ह़क़्क़े ने'मत अदा करने के। **25 :** मुसीबत पर साबिर और ने'मत पर शाकिर रहे **26 :** तिरमिज़ी ने कहा कि इस्तिफ़्हाम "नह्य" के मा'ना में है या'नी आप की त़रफ़ जो वह्य होती है वोह सब आप उन्हें पहुंचाएं और दिलतंग न हों। येह तब्लीग़े रिसालत की ताकीद है बा वुजूदे कि अल्लाह तआ़ला जानता है कि उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم अदाए रिसालत में कमी करने वाले नहीं और उस ने इन को इस से मा'सूम फ़रमाया है। इस ताकीद में नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ातिर भी है और कुफ़्फ़ार की मायूसी भी कि उन का इस्तिह्ज़ा तब्लीग़ के काम में मुख़िल नहीं हो सकता। **शाने नुज़ूल :** अ़ब्दुल्लाह बिन उमय्या मख़्ज़ूमी ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि अगर आप सच्चे रसूल हैं और आप का ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है तो उस ने आप पर ख़ज़ाना क्यूं नहीं उतारा ? या आप के साथ कोई फ़िरिश्ता क्यूं नहीं भेजा ? जो आप की रिसालत की गवाही देता, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **27 :** तुम्हें क्या परवाह अगर कुफ़्फ़ार न मानें या तमस्ख़ुर करें। **28 :** कुफ़्फ़ारे मक्का क़ुरआने करीम की निस्बत **29 :** क्यूं कि इन्सान अगर ऐसा कलाम बना सकता है तो इस के मिस्ल बनाना तुम्हारे मक़्दूर से बाहर न होगा ! तुम भी अ़रब हो फ़सीह़ो बलीग़ हो कोशिश करो। **30 :** अपनी मदद के लिये **31 :** इस में कि येह कलाम इन्सान का बनाया हुवा है। **32 :** और यक़ीन रखोगे कि येह अल्लाह की त़रफ़ से है, या'नी ए'जाज़े क़ुरआन देख लेने के बा'द ईमान व इस्लाम पर साबित रहो। **33 :** और अपनी दून हिम्मती (ग़फ़्लत) से आख़िरत पर नज़र न रखता हो।

www.dawateislami.net

اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿١٥﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ

उन का पूरा फल दे देंगे[34] और इस में कमी न देंगे येह हैं वोह जिन के लिये

لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا

आख़िरत में कुछ नहीं मगर आग और अकारत गया जो कुछ वहां करते थे और नाबूद (बरबाद) हुए जो उन के

يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ

अ़मल थे[35] तो क्या वोह जो अपने रब की त़रफ़ से रोशन दलील पर हो[36] और उस पर अल्लाह की त़रफ़ से गवाह आए[37] और उस

قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ

से पहले मूसा की किताब[38] पेश्वा और रह़मत वोह इस पर[39] ईमान लाते हैं और जो इस का मुन्किर हो

بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۗ اِنَّهُ الْحَقُّ

सारे गुरौहों में[40] तो आग उस का वा'दा है तो ऐ सुनने वाले तुझे कुछ उस में शक न हो बेशक वोह ह़क़ है

مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٧﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى

तेरे रब की त़रफ़ से लेकिन बहुत आदमी ईमान नहीं रखते और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ اُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَيَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ

झूट बांधे[41] वोह अपने रब के हुज़ूर पेश किये जाएंगे[42] और गवाह कहेंगे येह हैं

الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٨﴾ الَّذِيْنَ

जिन्हों ने अपने रब पर झूट बोला था अरे ज़ालिमों पर ख़ुदा की ला'नत[43] जो

34 : और जो आ'माल उन्हों ने त़लबे दुन्या के लिये किये हैं उस का अज्र सिह़्ह़तो दौलत, वुस्अ़ते रिज़्क़, कस्रते औलाद वग़ैरा से दुन्या ही में पूरा कर देंगे। **35 शाने नुज़ूल :** ज़ह़्ह़ाक ने कहा कि येह आयत मुश्रिकीन के ह़क़ में है कि वोह अगर सिलए रेह़्मी करें या मोह़्ताजों को दें या किसी परेशान ह़ाल की मदद करें या इस त़रह़ की कोई और नेकी करें तो अल्लाह तआ़ला वुस्अ़ते रिज़्क़ वग़ैरा से उन के अ़मल की जज़ा दुन्या ही में दे देता है और आख़िरत में उन के लिये कोई ह़िस्सा नहीं। एक क़ौल येह है कि येह आयत मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सवाबे आख़िरत के तो मो'तक़िद न थे और जिहादों में माले ग़नीमत ह़ासिल करने के लिये शामिल होते थे। **36 :** वोह उस की मिस्ल हो सकता है जो दुन्या की ज़िन्दगी और इस की आराइश चाहता हो, ऐसा नहीं, इन दोनों में अ़ज़ीम फ़र्क़ है। रोशन दलील से वोह दलीले अ़क़्ली मुराद है जो इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत पर दलालत करे और उस शख़्स से जो अपने रब की त़रफ़ से रोशन दलील पर हो वोह यहूद मुराद हैं जो इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए जैसे कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम। **37 :** और उस की सिह़्ह़त की गवाही दे। येह गवाह क़ुरआने मजीद है। **38 :** या'नी तौरैत। **39 :** या'नी क़ुरआन पर **40 :** ख़्वाह कोई भी हों। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उस की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की जान है ! इस उम्मत में जो कोई भी है यहूदी हो या नसरानी जिस को भी मेरी ख़बर पहुंचे और वोह मेरे दीन पर ईमान लाए बिग़ैर मर जाए, वोह ज़रूर जहन्नमी है। **41 :** और उस के लिये शरीक व औलाद बताए। इस आयत से साबित होता है कि अल्लाह तआ़ला पर झूट बोलना बद तरीन ज़ुल्म है। **42 :** रोज़े क़ियामत और उन से उन के आ'माल दरयाफ़्त किये जाएंगे और अम्बिया व मलाएका उन पर गवाही देंगे। **43 :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि रोज़े क़ियामत कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन

www.dawateislami.net

يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ

अल्लाह की राह से रोकते हैं और इस में कजी चाहते हैं और वोही आख़िरत के

كٰفِرُوْنَ ۝١٩ اُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ

मुन्किर हैं वोह थकाने वाले नहीं ज़मीन में[44] और न **अल्लाह** से जुदा

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ؕ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ وقف لازم

उन के कोई हिमायती[45] उन्हें अ़ज़ाब पर अ़ज़ाब होगा[46] वोह न सुन सकते

السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ۝٢٠ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَ

थे और न देखते[47] वोही हैं जिन्हों ने अपनी जान घाटे में डाली और

ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٢١ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ

उन से खोई गईं जो बातें जोड़ते थे ख़्वाह न ख़्वाह (यक़ीनन) वोही आख़िरत में सब से

الْاَخْسَرُوْنَ ۝٢٢ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى

ज़ियादा नुक़्सान में हैं[48] बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और अपने रब की तरफ़

رَبِّهِمْ ۙ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٢٣ مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ

रुजूअ़ लाए वोह जन्नत वाले हैं वोह उस में हमेशा रहेंगे दोनों फ़रीक़[49] का ह़ाल ऐसा है

كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ اَفَلَا

जैसे एक अन्धा और बहरा और दूसरा देखता और सुनता[50] क्या इन दोनों का ह़ाल एक सा है[51] तो क्या

تَذَكَّرُوْنَ ۝٢٤ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ ۫ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ ع ٢ ١٢

तुम ध्यान नहीं करते और बेशक हम ने नूह़ को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा[52] कि मैं तुम्हारे लिये सरीह़ डर

को तमाम ख़ल्क़ के सामने कहा जाएगा कि येह वोह हैं जिन्हों ने अपने रब पर झूट बोला, ज़ालिमों पर ख़ुदा की ला'नत, इस त़रह़ वोह तमाम ख़ल्क़ के सामने रुस्वा किये जाएंगे। **44 :** **अल्लाह** को। अगर वोह उन पर अ़ज़ाब करना चाहे क्यूं कि वोह उस के क़ब्ज़े और उस की मिल्क में हैं, न उस से भाग सकते हैं न बच सकते हैं। **45 :** कि उन की मदद करें और उन्हें उस के अ़ज़ाब से बचाएं। **46 :** क्यूं कि उन्हों ने लोगों को राहे ख़ुदा से रोका और मरने के बा'द उठने का इन्कार किया। **47 :** क़तादा ने कहा कि वोह ह़क़ सुनने से बहरे हो गए तो कोई ख़ैर की बात सुन कर नफ़्अ़ नहीं उठाते और न वोह आयाते क़ुदरत को देख कर फ़ाएदा उठाते हैं। **48 :** कि उन्हों ने बजाए जन्नत के जहन्नम को इख़्तियार किया। **49 :** या'नी काफ़िर और मोमिन **50 :** काफ़िर उस की मिस्ल है जो न देखे न सुने, येह नाक़िस है और मोमिन उस की मिस्ल है जो देखता भी है और सुनता भी है, वोह कामिल है ह़क़ व बात़िल में इम्तियाज़ रखता है। **51 :** हरगिज़ नहीं **52 :** उन्हों ने क़ौम से फ़रमाया।

مُّبِيْنٌ ﴿٢٥﴾ اَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ

सुनाने वाला हूं कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो बेशक मैं तुम पर एक मुसीबत वाले दिन के अ़ज़ाब से

اَلِيْمٍ ﴿٢٦﴾ فَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا

डरता हूं[53] तो उस की क़ौम के सरदार जो काफ़िर हुए थे बोले हम तो तुम्हें अपने ही जैसा आदमी देखते

مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّاْيِ ۚ وَ

हैं[54] और हम नहीं देखते कि तुम्हारी पैरवी किसी ने की हो मगर हमारे कमीनों ने[55] सरसरी नज़र से[56] और

مَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ يٰقَوْمِ

हम तुम में अपने ऊपर कोई बड़ाई नहीं पाते[57] बल्कि हम तुम्हें[58] झूटा ख़याल करते हैं बोला ऐ मेरी क़ौम

اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ

भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की त़रफ़ से रोशन दलील पर हूं[59] और उस ने मुझे अपने पास से रह़मत बख़्शी[60]

فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ؕ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَيٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ

तो तुम उस से अन्धे रहे क्या हम उसे तुम्हारे गले चपेट दें और तुम बेज़ार हो[61] और ऐ क़ौम मैं तुम से कुछ इस पर[62]

عَلَيْهِ مَالًا ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ

माल नहीं मांगता[63] मेरा अज्र तो अल्लाह ही पर है और मैं मुसल्मानों को दूर करने वाला नहीं[64]

اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ وَيٰقَوْمِ مَنْ

बेशक वोह अपने रब से मिलने वाले हैं[65] लेकिन मैं तुम को निरे जाहिल लोग पाता हूं[66] और ऐ क़ौम

53 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام चालीस साल के बा'द मब्ऊ़स हुए और नव सो पचास साल अपनी क़ौम को दा'वत फ़रमाते रहे और त़ूफ़ान के बा'द साठ बरस दुन्या में रहे तो आप की उ़म्र एक हज़ार पचास साल की हुई, इस के इ़लावा उ़म्र शरीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ और भी क़ौल हैं। (خازن) **54 :** इस गुमराही में बहुत सी उम्मतें मुब्तला हो कर इस्लाम से मह़रूम रहीं, क़ुरआने पाक में जा ब जा उन के तज़्किरे हैं। इस उम्मत में भी बहुत से बद नसीब सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को बशर कहते और हमसरी का ख़याले फ़ासिद रखते हैं। अल्लाह तआ़ला उन्हें गुमराही से बचाए। **55 :** कमीनों से मुराद उन की वोह लोग थे जो उन की नज़र में ख़सीस (अदना व मा'मूली) पेशे रखते थे और ह़क़ीक़त येह है कि उन का येह क़ौल जह्ले ख़ालिस था क्यूं कि इन्सान का मर्तबा दीन की इत्तिबाअ़ और रसूल की फ़रमां बरदारी से है मालो मन्सब व पेशे को इस में दख़्ल नहीं। दीनदार नेक सीरत पेशावर को नज़रे ह़क़ारत से देखना और ह़क़ीर जानना जाहिलाना फ़े'ल है। **56 :** या'नी बिग़ैर ग़ौरो फ़िक्र के। **57 :** माल और रियासत में, उन का येह क़ौल भी जह्ल था क्यूं कि अल्लाह के नज़्दीक बन्दे के लिये ईमान व त़ाअ़त सबबे फ़ज़ीलत है न कि माल व रियासत। **58 :** नुबुव्वत के दा'वे में और तुम्हारे मुत्तबिईन को इस की तस्दीक़ में **59 :** जो मेरे दा'वे के सिद्क़ पर गवाह हो **60 :** या'नी नुबुव्वत अ़त़ा की **61 :** और इस ह़ुज्जत को ना पसन्द रखते हो। **62 :** या'नी तब्लीग़े रिसालत पर **63 :** कि तुम पर उस का अदा करना गिरां हो **64 :** येह ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام ने उन की इस बात के जवाब में फ़रमाया था जो वोह लोग कहते थे कि ऐ नूह़ ! रज़ील (ह़क़ीर व कमीन) लोगों को अपनी मजलिस से निकाल दीजिये ताकि हमें आप की मजलिस में बैठने से शर्म न आए। **65 :** और उस के क़ुर्ब से फ़ाइज़ होंगे तो मैं उन्हें कैसे निकाल दूं **66 :** ईमानदारों को रज़ील कहते हो और

www.dawateislami.net

يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ

मुझे अल्लाह से कौन बचा लेगा अगर मैं उन्हें दूर करूंगा तो क्या तुम्हें ध्यान नहीं और मैं तुम से नहीं कहता कि

عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ اِنِّيْ مَلَكٌ وَّلَاۤ اَقُوْلُ

मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न येह कि मैं ग़ैब जान लेता हूं और न येह कहता हूं कि मैं फ़िरिश्ता हूं[67] और मैं उन्हें नहीं कहता

لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْۤ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْۤ

जिन को तुम्हारी निगाहें हक़ीर समझती हैं कि हरगिज़ उन्हें अल्लाह कोई भलाई न देगा अल्लाह ख़ूब जानता है जो

اَنْفُسِهِمْ ۖ اِنِّيْۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا

उन के दिलों में है[68] ऐसा करूं[69] तो ज़रूर मैं ज़ालिमों में से हूं[70] बोले ऐ नूह़ तुम हम से झगड़े

فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ

और बहुत ही झगड़े तो ले आओ जिस[71] का हमें वा'दा दे रहे हो अगर सच्चे हो बोला

اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَنْفَعُكُمْ

वोह तो अल्लाह तुम पर लाएगा अगर चाहे और तुम थका न सकोगे[72] और तुम्हें मेरी नसीह़त

نُصْحِيْۤ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ؕ هُوَ

नफ़्अ़ न देगी अगर मैं तुम्हारा भला चाहूं जब कि अल्लाह तुम्हारी गुमराही चाहे वोह

उन की क़द्र नहीं करते और नहीं जानते कि वोह तुम से बेहतर हैं। **67 :** ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات की क़ौम ने आप की नुबुव्वत में तीन शुब्हे किये थे **: एक** शुबा तो येह कि "مَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ" कि हम तुम में अपने ऊपर कोई बड़ाई नहीं पाते या'नी तुम मालो दौलत में हम से ज़ियादा नहीं हो। इस के जवाब में ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات ने फ़रमाया **:** "لَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ" या'नी मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, तो तुम्हारा येह ए'तिराज़ बिल्कुल बे महल है। मैं ने कभी माल की फ़ज़ीलत नहीं जताई और दुन्यवी दौलत का तुम को मुतवक़्क़ेअ़ नहीं किया और अपनी दा'वत को माल के साथ वाबस्ता नहीं किया फिर तुम येह कहने के कैसे मुस्तह़िक़ हो कि हम तुम में कोई माली फ़ज़ीलत नहीं पाते और तुम्हारा येह ए'तिराज़ महज़ बेहूदा है। **दूसरा** शुबा क़ौमे नूह़ ने येह किया था **:** "مَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّاْيِ" या'नी हम नहीं देखते कि तुम्हारी किसी ने पैरवी की हो मगर हमारे कमीनों ने सरसरी नज़र से। मत़लब येह था कि वोह भी सिर्फ़ ज़ाहिर में मोमिन हैं बात़िन में नहीं। इस के जवाब में ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने येह फ़रमाया कि मैं नहीं कहता कि मैं ग़ैब जानता हूं तो मेरे अह़काम ग़ैब पर मब्नी हैं ताकि तुम्हें येह ए'तिराज़ करने का मौक़अ़ होता। जब मैं ने येह कहा ही नहीं, तो ए'तिराज़ बे महल है, और शरअ़ में ज़ाहिर ही का ए'तिबार है, लिहाज़ा तुम्हारा ए'तिराज़ बिल्कुल बे जा है नीज़ "لَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ" फ़रमाने में क़ौम पर एक लत़ीफ़ ता'रीज़ भी है कि किसी के बात़िन पर ह़ुक्म करना उस का काम है जो ग़ैब का इ़ल्म रखता हो। मैं ने तो इस का दा'वा नहीं किया बा वुजूदे कि नबी हूं ! तुम किस त़रह़ कहते हो कि वोह दिल से ईमान नहीं लाए। **तीसरा** शुबा उस क़ौम का येह था कि "مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا" या'नी हम तुम्हें अपने ही जैसा आदमी देखते हैं। इस के जवाब में फ़रमाया कि मैं तुम से येह नहीं कहता कि मैं फ़िरिश्ता हूं या'नी मैं ने अपनी दा'वत को अपने फ़िरिश्ता होने पर मौक़ूफ़ नहीं किया था कि तुम्हें येह ए'तिराज़ का मौक़अ़ मिलता कि जताते तो थे वोह अपने आप को फ़िरिश्ता और थे बशर लिहाज़ा तुम्हारा येह ए'तिराज़ भी बात़िल है। **68 :** नेकी या बदी, इख़्लास या निफ़ाक़। **69 :** या'नी अगर मैं उन के ईमाने ज़ाहिर को झुटला कर उन के बात़िन पर इल्ज़ाम लगाऊं और उन्हें निकाल दूं **70 :** और بِحَمْدِاللّٰه मैं ज़ालिमों में से हरगिज़ नहीं हूं तो ऐसा कभी न करूंगा। **71 :** अ़ज़ाब **72 :** उस को अ़ज़ाब करने से, या'नी न उस अ़ज़ाब

www.dawateislami.net

رَبُّكُمْ ۫ وَ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ؕ﴿۳۴﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ

तुम्हारा रब है और उसी की त़रफ़ फिरोगे[73] क्या येह कहते हैं कि इन्हों ने इसे अपने जी से बना लिया[74] तुम फ़रमाओ अगर मैं ने बना लिया होगा

ع ٣ فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ وَ اَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ﴿۳۵﴾ ع وَ اُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ

तो मेरा गुनाह मुझ पर है[75] और मैं तुम्हारे गुनाह से अलग हूं और नूह़ को वह़्य हुई कि तुम्हारी

يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَىٕسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۳۶﴾ ۚ

क़ौम से मुसलमान न होंगे मगर जितने ईमान ला चुके तो ग़म न खा उस पर जो वोह करते हैं[76]

وَ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَ وَحْيِنَا وَ لَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ

और कश्ती बना हमारे सामने[77] और हमारे हुक्म से और ज़ालिमों के बारे में मुझ से बात न करना[78] वोह ज़रूर

مُّغْرَقُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَ يَصْنَعُ الْفُلْكَ ۫ وَ كُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا

डुबाए जाएंगे[79] और नूह़ कश्ती बनाता है और जब उस की क़ौम के सरदार उस पर गुज़रते उस पर

مِنْهُ ؕ قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ؕ﴿۳۸﴾ فَسَوْفَ

हंसते[80] बोला अगर तुम हम पर हंसते हो तो एक वक़्त हम तुम पर हंसेंगे[81] जैसा तुम हंसते हो[82] तो अब

تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَ يَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿۳۹﴾

जान जाओगे किस पर आता है वोह अ़ज़ाब कि उसे रुस्वा करे[83] और उतरता है वोह अ़ज़ाब जो हमेशा रहे[84]

को रोक सकोगे न उस से बच सकोगे। **73 :** आख़िरत में वोही तुम्हारे आ'माल का बदला देगा। **74 :** और इस त़रह़ ख़ुदा के कलाम और उस के अह़काम मानने से गुरेज़ करते हैं और उस के रसूल पर बोहतान उठाते हैं और उन की त़रफ़ इफ़्तिरा की निस्बत करते हैं जिन का सिद्क़ (सच्चा होना) बराहीने बय्यिना और हुज्जते क़विय्या (इन्तिहाई वाज़ेह़ और मज़बूत़ दलाइल) से साबित हो चुका है, लिहाज़ा अब उन से **75 :** ज़रूर इस का वबाल आएगा लेकिन "بِحَمْدِاللّٰہ" मैं सादिक़ हूं, तो तुम समझ लो कि तुम्हारी तक्ज़ीब का वबाल तुम पर पड़ेगा। **76 :** या'नी कुफ़्र और आप की तक्ज़ीब और आप की ईज़ा क्यूं कि अब आप के आ'दा से इन्तिक़ाम लेने का वक़्त आ गया। **77 :** हमारी ह़िफ़ाज़त में, हमारी ता'लीम से **78 :** या'नी उन की शफ़ाअ़त और दफ़्ए अ़ज़ाब की दुआ़ न करना क्यूं कि उन का ग़र्क़ मुक़द्दर हो चुका है **79 :** ह़दीस शरीफ़ में है कि ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ब हुक्मे इलाही साल के दरख़्त बोए, बीस साल में येह दरख़्त तय्यार हुए। इस अ़र्से में मुत़्लक़न कोई बच्चा पैदा न हुवा, इस से पहले जो बच्चे पैदा हो चुके थे वोह बालिग़ हो गए और उन्हों ने भी ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की दा'वत क़बूल करने से इन्कार कर दिया और ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام कश्ती बनाने में मश्ग़ूल हुए। **80 :** और कहते ऐ नूह़ ! क्या करते हो ? आप फ़रमाते : ऐसा मकान बनाता हूं जो पानी पर चले। येह सुन कर हंसते क्यूं कि आप कश्ती जंगल में बनाते थे जहां दूर दूर तक पानी न था और वोह लोग तमस्ख़ुर (मज़ाक़) से येह भी कहते थे कि पहले तो आप नबी थे अब बढ़ई हो गए। **81 :** तुम्हें हलाक होता देख कर **82 :** कश्ती देख कर। मरवी है कि येह कश्ती दो साल में तय्यार हुई, इस की लम्बाई तीन सो गज़, चौड़ाई पचास गज़, ऊंचाई तीस गज़ थी, इस में और भी अक़्वाल हैं। इस कश्ती में तीन दरजे बनाए गए थे। त़ब्क़ए ज़ेरीं (निचली मन्ज़िल) में वुह़ूश (जंगली जानवर) और दरिन्दे (चीर फाड़ करने वाले जानवर) और हवाम (ज़मीन पर रींगने वाले जानवर) और दरमियानी त़बक़े में चौपाए वग़ैरा, और त़ब्क़ए आ'ला में ख़ुद ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام और आप के साथी और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का जसदे मुबारक जो औ़रतों और मर्दों के दरमियान ह़ाइल था और खाने वग़ैरा का सामान था। परिन्दे भी ऊपर ही के त़ब्क़े में थे। (خازن ومدارک) **83 :** दुन्या में और वोह अ़ज़ाबे ग़र्क़ है। **84 :** या'नी अ़ज़ाबे आख़िरत।

حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ

यहां तक कि जब हमारा हुक्म आया[85] और तन्नूर उबला[86] हम ने फ़रमाया कश्ती में सुवार कर ले हर जिन्स में से एक जोड़ा

اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ؕ وَمَاۤ اٰمَنَ مَعَهٗۤ

नर व मादा और जिन पर बात पड़ चुकी है[87] उन के सिवा अपने घर वालों और बाक़ी मुसल्मानों को और उस के साथ मुसल्मान न थे

اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿۴۰﴾ وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ؕ اِنَّ

मगर थोड़े[88] और बोला इस में सुवार हो[89] अल्लाह के नाम पर इस का चलना और इस का ठहरना[90] बेशक

رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۴۱﴾ وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۫ وَنَادٰى

मेरा रब ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है और वोह उन्हें लिये जा रही है ऐसी मौजों में जैसे पहाड़[91] और नूह ने

نُوْحُ ِۨابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۴۲﴾

अपने बेटे को पुकारा और वोह उस से कनारे था[92] ऐ मेरे बच्चे हमारे साथ सुवार हो जा और काफ़िरों के साथ न हो[93]

قَالَ سَاٰوِيْۤ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ؕ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ

बोला अब मैं किसी पहाड़ की पनाह लेता हूं वोह मुझे पानी से बचा लेगा कहा आज अल्लाह के अ़ज़ाब से कोई बचाने वाला

اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ﴿۴۳﴾

नहीं मगर जिस पर वोह रह़्म करे और उन के बीच में मौज आड़े आई तो वोह डूबतों में रह गया[94]

وَقِيْلَ يٰۤاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ

और हुक्म फ़रमाया गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी निगल ले और ऐ आस्मान थम जा और पानी ख़ुश्क कर दिया गया और काम तमाम

85 : अ़ज़ाब व हलाक का **86 :** और पानी ने उस में से जोश मारा। तन्नूर से या रूए ज़मीन मुराद है या येही तन्नूर जिस में रोटी भी पकाई जाती है। इस में भी चन्द क़ौल है : एक क़ौल येह है कि वोह तन्नूर पथ्थर का था, ह़ज़रते ह़व्वा का जो आप को तर्के में पहुंचा था और वोह या शाम में था या हिन्द में और तन्नूर का जोश मारना अ़ज़ाब आने की अ़लामत थी। **87 :** या'नी उन के हलाक का हुक्म हो चुका है और उन से मुराद आप की बीबी वाइ़ला जो ईमान न लाई थी और आप का बेटा कन्आ़न है। चुनान्चे ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन सब को सुवार किया। जानवर आप के पास आते थे और आप का दाहना हाथ नर पर और बायां मादा पर पड़ता था और आप सुवार करते जाते थे। **88 :** मुक़ातिल ने कहा कि कुल मर्द व औ़रत बहत्तर 72 थे और इस में और अक़्वाल भी हैं, सह़ीह़ ता'दाद अल्लाह जानता है उन की ता'दाद किसी सह़ीह़ ह़दीस में वारिद नहीं है। **89 :** येह कहते हुए कि **90 :** इस में ता'लीम है कि बन्दे को चाहिये जब कोई काम करना चाहे तो उस को "بِسْمِ اللّٰه" पढ़ कर शुरूअ़ करे ताकि उस काम में बरकत हो और वोह सबबे फ़लाह़ हो। ज़ह़्हाक ने कहा कि जब ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام चाहते थे कि कश्ती चले तो "بِسْمِ اللّٰه" फ़रमाते थे कश्ती चलने लगती थी और जब चाहते थे कि ठहर जाए "بِسْمِ اللّٰه" फ़रमाते थे ठहर जाती थी। **91 :** चालीस शबो रोज़ आस्मान से मींह बरसता रहा और ज़मीन से पानी उबलता रहा यहां तक कि तमाम पहाड़ ग़र्क़ हो गए। **92 :** या'नी ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام से जुदा था, आप के साथ सुवार न हुवा था। **93 :** कि हलाक हो जाएगा। येह लड़का मुनाफ़िक़ था, अपने वालिद पर अपने आप को मुसल्मान ज़ाहिर करता था और बात़िन में काफ़िरों के साथ मुत्तफ़िक़ था। (ख़ाज़िन) **94 :** जब तूफ़ान अपनी निहायत (इन्तिहा) पर पहुंचा और कुफ़्फ़ार ग़र्क़ हो चुके तो हुक्मे इलाही आया।

قرء حفص بفتح الميم وامالة الراء ١٢

www.dawateislami.net

الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَ

हुवा और कश्ती[95] कोहे जूदी पर ठहरी[96] और फ़रमाया गया कि दूर हों बे इन्साफ़ लोग और

نَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ مِنْ اَهْلِيْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ

नूह़ ने अपने रब को पुकारा अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरा बेटा भी तो मेरा घर वाला है[97] और बेशक तेरा वा'दा सच्चा है

وَاَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٤٥﴾ قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ

और तू सब से बढ़ कर हुक्म वाला[98] फ़रमाया ऐ नूह़ वोह तेरे घर वालों में नहीं[99] बेशक उस के

عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۫ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنِّيْۤ اَعِظُكَ اَنْ

काम बड़े ना लाइक़ हैं तो मुझ से वोह बात न मांग जिस का तुझे इ़ल्म नहीं[100] मैं तुझे नसीह़त फ़रमाता हूं कि

تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْۤ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ

नादान न बन अ़र्ज़ की ऐ रब मेरे मैं तेरी पनाह चाहता हूं कि तुझ से वोह चीज़ मांगूं जिस का

لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْۤ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٤٧﴾ قِيْلَ

मुझे इ़ल्म नहीं और अगर तू मुझे न बख़्शे और रह़्म न करे तो मैं ज़ियांकार (नुक़्सान उठाने वाला) हो जाऊं फ़रमाया गया

يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلٰۤى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ وَ

ऐ नूह़ कश्ती से उतर हमारी त़रफ़ से सलाम और बरकतों के साथ[101] जो तुझ पर हैं और तेरे साथ के कुछ गुरोहों पर[102] और

اُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٨﴾ تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ

कुछ गुरोह वोह हैं जिन्हें हम दुन्या बरत्ने देंगे[103] फिर उन्हें हमारी त़रफ़ से दर्दनाक अ़ज़ाब पहुंचेगा[104] येह ग़ैब की ख़बरें हैं

95 : छ[6] महीने तमाम ज़मीन का त़वाफ़ कर के **96 :** जो मौसिल या शाम की हुदूद में वाक़ेअ़ है, ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام कश्ती में दसवीं रजब को बैठे और दसवीं मुह़र्रम को कश्ती कोहे जूदी पर ठहरी तो आप ने उस के शुक्र का रोज़ा रखा और अपने तमाम साथियों को भी रोज़े का हुक्म फ़रमाया। **97 :** और तू ने मुझ से मेरे और मेरे घर वालों की नजात का वा'दा फ़रमाया है **98 :** तो इस में क्या ह़िक्मत है ? शैख़ अबू मन्सूर मातुरीदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया कि ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का बेटा कन्आ़न मुनाफ़िक़ था और आप के सामने अपने आप को मोमिन ज़ाहिर करता था अगर वोह अपना कुफ़्र ज़ाहिर कर देता तो आप **अल्लाह** तआ़ला से उस के नजात की दुआ़ न करते। (مدارک) **99 :** इस से साबित हुवा कि नसबी क़राबत से दीनी क़राबत ज़ियादा क़वी है। **100 :** कि वोह मांगने के क़ाबिल है या नहीं। **101 :** इन बरकतों से आप की ज़ुर्रिय्यत (औलाद) और आप के मुत्तबिईन की कसरत मुराद है कि ब कसरत अम्बिया और अइम्मए दीन आप की नस्ले पाक से हुए, उन की निस्बत फ़रमाया कि येह बरकात। **102 :** मुह़म्मद बिन का'ब क़ुरज़ी ने कहा कि इन गुरोहों में क़ियामत तक होने वाला हर एक मोमिन दाख़िल है। **103 :** इस से ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द पैदा होने वाले काफ़िर गुरोह मुराद हैं जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला उन की मीआ़दों तक फ़राख़िये ऐ़श (लम्बी ज़िन्दगी) और वुस्अ़ते रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा। **104 :** आख़िरत में।

www.dawateislami.net

نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛ

कि हम तुम्हारी त़रफ़ वह्य करते हैं[105] उन्हें न तुम जानते थे न तुम्हारी क़ौम इस[106] से पहले

فَاصْبِرْ ۛ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۹﴾ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ۛ قَالَ

तो सब्र कर[107] बेशक भला अन्जाम परहेज़ गारों का[108] और आ़द की त़रफ़ उन के हमक़ौम हूद को[109] कहा

يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۛ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ﴿۵۰﴾

ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो[110] उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं तुम तो निरे मुफ़्तरी (बिल्कुल झूटे इल्ज़ाम आ़इद करने वाले) हो[111]

يٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ۛ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى الَّذِيْ فَطَرَنِيْ ۛ اَفَلَا

ऐ क़ौम मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मेरी मज़दूरी तो उसी के ज़िम्मे है जिस ने मुझे पैदा किया[112] तो क्या

تَعْقِلُوْنَ ﴿۵۱﴾ وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ

तुम्हें अ़क़्ल नहीं[113] और ऐ मेरी क़ौम अपने रब से मुआ़फ़ी चाहो[114] फिर उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ तुम पर

السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا

ज़ोर का पानी भेजेगा और तुम में जितनी क़ुव्वत है उस से और ज़ियादा देगा[115] और जुर्म करते हुए

105 : येह ख़िताब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को फ़रमाया। **106 :** ख़बर देने **107 :** अपनी क़ौम की ईज़ाओं पर जैसा कि नूह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम की ईज़ाओं पर सब्र किया। **108 :** कि दुन्या में मुज़फ़्फ़र व मन्सूर और आख़िरत में मुसाब व माजूर (अज्रो सवाब के मुस्तह़िक़) । **109 :** नबी बना कर भेजा, ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام को "اَخْ" (भाई) ब ए'तिबारे नसब फ़रमाया गया, इसी लिये ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने इस लफ़्ज़ का तरजमा हमक़ौम किया "اَعْلَى اللّٰهُ مَقَامَهٗ" (अल्लाह तआ़ला इन के दरजात बुलन्द फ़रमाए) । **110 :** उस की तौह़ीद के मो'तक़िद रहो, उस के साथ किसी को शरीक न करो। **111 :** जो बुतों को ख़ुदा का शरीक बताते हो। **112 :** जितने रसूल तशरीफ़ लाए सब ने अपनी क़ौमों से येही फ़रमाया और नसीह़ते ख़ालिसा वोही है जो किसी त़मअ़ से न हो। **113 :** इतना समझ सको कि जो महज़ बे ग़रज़ नसीह़त करता है वोह यक़ीनन ख़ैर ख़्वाह और सच्चा है। बात़िल कार जो किसी को गुमराह करता है ज़रूर किसी न किसी ग़रज़ और किसी न किसी मक़्सद से करता है। इस से ह़क़ व बात़िल में ब आसानी तमीज़ की जा सकती है। **114 :** ईमान ला कर। जब क़ौमे आ़द ने ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام की दा'वत क़बूल न की तो अल्लाह तआ़ला ने उन के कुफ़्र के सबब तीन साल तक बारिश मौक़ूफ़ कर दी और निहायत शदीद क़ह़त नुमूदार हुवा और उन की औ़रतों को बांझ कर दिया, जब येह लोग बहुत परेशान हुए तो ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने वा'दा फ़रमाया कि अगर वोह अल्लाह पर ईमान लाएं और उस के रसूल की तस्दीक़ करें और उस के ह़ुज़ूर तौबा व इस्तिग़्फ़ार करें तो अल्लाह तआ़ला बारिश भेजेगा और उन की ज़मीनों को सर सब्ज़ो शादाब कर के ताज़ा ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमाएगा और क़ुव्वत व औलाद देगा। ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मरतबा अमीरे मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के पास तशरीफ़ ले गए तो आप से (ह़ज़रते) अमीरे मुआ़विया के एक मुलाज़िम ने कहा कि मैं मालदार आदमी हूं मगर मेरे कोई औलाद नहीं, मुझे कोई ऐसी चीज़ बताइये जिस से अल्लाह मुझे औलाद दे। आप ने फ़रमाया : इस्तिग़्फ़ार पढ़ा करो। उस ने इस्तिग़्फ़ार की यहां तक कसरत की, कि रोज़ाना सात सो मरतबा इस्तिग़्फ़ार पढ़ने लगा, इस की बरकत से उस शख़्स के दस बेटे हुए। येह ख़बर ह़ज़रते मुआ़विया को हुई तो उन्हों ने उस शख़्स से फ़रमाया कि तू ने ह़ज़रत इमाम से येह क्यूं न दरयाफ़्त किया कि येह अ़मल ह़ुज़ूर ने कहां से फ़रमाया ? दूसरी मरतबा जब उस शख़्स को इमाम से नियाज़ ह़ासिल हुवा तो उस ने येह दरयाफ़्त किया : इमाम ने फ़रमाया कि तू ने ह़ज़रते हूद का क़ौल नहीं सुना जो उन्हों ने फ़रमाया : "يَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ" (तुम में जितनी क़ुव्वत है उस से और ज़ियादा देगा) और ह़ज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام का येह इर्शाद : "يُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ" (माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा) **फ़ाएदा :** कसरते रिज़्क़ और ह़ुसूले औलाद के लिये इस्तिग़्फ़ार का ब कसरत पढ़ना क़ुरआनी अ़मल है। **115 :** माल व औलाद के साथ।

www.dawateislami.net

مُجْرِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا

रू गर्दानी न करो[116] बोले ऐ हूद तुम कोई दलील ले कर हमारे पास न आए[117] और हम ख़ाली तुम्हारे कहने से अपने ख़ुदाओं को छोड़ने

عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٣﴾ اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ

के नहीं न तुम्हारी बात पर यक़ीन लाएं हम तो येही कहते हैं कि हमारे किसी ख़ुदा की

اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ؕ قَالَ اِنِّيْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا

तुम्हें बुरी झपट (पकड़) पहुंची[118] कहा मैं अल्लाह को गवाह करता हूं और तुम सब गवाह हो जाओ कि मैं बेज़ार हूं उन सब से जिन्हें

تُشْرِكُوْنَ ﴿٥٤﴾ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٥٥﴾ اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ

तुम अल्लाह के सिवा उस का शरीक ठहराते हो तुम सब मिल कर मेरा बुरा चाहो[119] फिर मुझे मोहलत न दो[120] मैं ने अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ؕ مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ

भरोसा किया जो मेरा रब है और तुम्हारा रब कोई चलने वाला नहीं[121] जिस की चोटी उस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में न हो[122] बेशक मेरा रब

عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٦﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖٓ

सीधे रास्ते पर मिलता है फिर अगर तुम मुंह फेरो तो मैं तुम्हें पहुंचा चुका जो तुम्हारी तरफ़

اِلَيْكُمْ ؕ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ

ले कर भेजा गया[123] और मेरा रब तुम्हारी जगह औरों को ले आएगा[124] और तुम उस का कुछ न बिगाड़ सकोगे[125] बेशक

رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٥٧﴾ وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ

मेरा रब हर शै पर निगहबान है[126] और जब हमारा हुक्म आया हम ने हूद और उस के

116 : मेरी दा'वत से। **117 :** जो तुम्हारे दा'वे की सिह्हत पर दलालत करती और येह बात उन्हों ने बिल्कुल ग़लत और झूट कही थी। ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें जो मो'जिज़ात दिखाए थे उन सब से मुकर गए। **118 :** या'नी तुम जो बुतों को बुरा कहते हो, इस लिये उन्हों ने तुम्हें दीवाना कर दिया, मुराद येह है कि अब जो कुछ कहते हो येह दीवानगी की बातें हैं। (مَعَاذَاللّٰه) **119 :** या'नी तुम और वोह जिन्हें तुम मा'बूद समझते हो सब मिल कर मुझे ज़रर पहुंचाने की कोशिश करो। **120 :** मुझे तुम्हारी और तुम्हारे मा'बूदों की और तुम्हारी मक्कारियों की कुछ परवाह नहीं और मुझे तुम्हारी शौकतो क़ुव्वत से कुछ अन्देशा नहीं, जिन को तुम मा'बूद कहते हो वोह जमाद व बेजान हैं, न किसी को नफ़्अ़ पहुंचा सकते हैं न ज़रर, उन की क्या ह़क़ीक़त कि वोह मुझे दीवाना कर सकते। येह ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام का मो'जिज़ा है कि आप ने एक ज़बर दस्त जब्बार साह़िबे क़ुव्वतो शौकत क़ौम से जो आप के ख़ून की प्यासी और जान की दुश्मन थी, इस तरह़ के कलिमात फ़रमाए और अस्लन ख़ौफ़ न किया और वोह क़ौम बा वुजूद इन्तिहाई अ़दावत और दुश्मनी के आप को ज़रर पहुंचाने से आ़जिज़ रही। **121 :** इस में बनी आदम और ह़ैवान सब आ गए। **122 :** या'नी वोह सब का मालिक है और सब पर ग़ालिब और क़ादिर व मुतसर्रिफ़ है। **123 :** और हुज्जत साबित हो चुकी। **124 :** या'नी अगर तुम ने ईमान से ए'राज़ किया और जो अह़काम मैं तुम्हारी तरफ़ लाया हूं उन्हें क़बूल न किया तो अल्लाह तुम्हें हलाक करेगा और बजाए तुम्हारे एक दूसरी क़ौम को तुम्हारे दियार व अम्वाल का वाली बनाएगा जो उस की तौह़ीद के मो'तक़िद हों और उस की इ़बादत करें। **125 :** क्यूं कि वोह इस से पाक है कि उसे कोई ज़रर पहुंच सके, लिहाज़ा तुम्हारे ए'राज़ का जो ज़रर है वोह तुम्हीं को पहुंचेगा। **126 :** और किसी का क़ौल, फ़े'ल उस से मख़्फ़ी नहीं। जब क़ौमे हूद नसीह़त पज़ीर न हुई तो बारगाहे क़दीरे बरह़क़ से उन के अ़ज़ाब का हुक्म नाफ़िज़ हुवा।

www.dawateislami.net

اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿۵۸﴾ وَتِلْكَ عَادٌ ۗ قف

साथ के मुसल्मानों को[127] अपनी रहमत फ़रमा कर बचा लिया[128] और उन्हें[129] सख़्त अ़ज़ाब से नजात दी और येह आ़द हैं[130]

جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْۤا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ

कि अपने रब की आयतों से मुन्किर हुए और उस के रसूलों की ना फ़रमानी की और हर बड़े सरकश हटधर्म के

عَنِيْدٍ ﴿۵۹﴾ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ عَادًا

कहने पर चले और उन के पीछे लगी इस दुन्या में ला'नत और क़ियामत के दिन सुन लो बेशक आ़द

كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ﴿۶۰﴾ ع وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ ع ٥

अपने रब से मुन्किर हुए अरे दूर हों आ़द हूद की क़ौम और समूद की त़रफ़ उन के हमक़ौम

صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ هُوَ اَنْشَاَكُمْ وقف لازم

सालेह़ को[131] कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो[132] उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं[133] उस ने तुम्हें

مِّنَ الْاَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ

ज़मीन से पैदा किया[134] और इस में तुम्हें बसाया[135] तो उस से मुआ़फ़ी चाहो फिर उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ बेशक

رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ﴿۶۱﴾ قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَاۤ

मेरा रब क़रीब है दुआ़ सुनने वाला बोले ऐ सालेह़ इस से पहले तो तुम हम में होनहार मा'लूम होते थे[136]

اَتَنْهٰىنَاۤ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَاۤ اِلَيْهِ

क्या तुम हमें इस से मन्अ़ करते हो कि अपने बाप दादा के मा'बूदों को पूजें और बेशक जिस बात की त़रफ़ हमें बुलाते हो हम उस से एक बड़े धोका डालने वाले

مُرِيْبٍ ﴿۶۲﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ

शक में हैं बोला ऐ मेरी क़ौम भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की त़रफ़ से रोशन दलील पर हूं और उस ने मुझे

127 : जिन की ता'दाद चार हज़ार थी। **128 :** और क़ौमे आ़द को हवा के अ़ज़ाब से हलाक कर दिया **129 :** या'नी जैसे मुसल्मानों को अ़ज़ाबे दुन्या से बचाया ऐसे ही आख़िरत के **130 :** येह ख़ित़ाब है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की उम्मत को, और تِلْكَ इशारा है क़ौमे आ़द की क़ुबूर व आसार की त़रफ़। मक़्सद येह है कि ज़मीन में चलो इन्हें देखो और इब्रत ह़ासिल करो **131 :** भेजा, तो ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने उन से **132 :** और उस की वह़दानिय्यत मानो **133 :** सिर्फ़ वोही मुस्तह़िक़्क़े इबादत है क्यूं कि **134 :** तुम्हारे जद ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को इस से पैदा कर के और तुम्हारी नस्ल की अस्ल नुत़्फ़ों के माद्दों को इस से बना कर। **135 :** और ज़मीन को तुम से आबाद किया। ज़ह़्ह़ाक ने "اِسْتَعْمَرَكُمْ" के मा'ना येह बयान किये हैं कि तुम्हें त़वील उ़म्रें दीं, ह़त्ता कि उन की उ़म्रें तीन सो बरस से ले कर हज़ार बरस तक की हुई। **136 :** और हम उम्मीद करते थे कि तुम हमारे सरदार बनोगे क्यूं कि आप कमज़ोरों की मदद करते थे, फ़क़ीरों पर सख़ावत फ़रमाते थे, जब आप ने तौह़ीद की दा'वत दी और बुतों की बुराइयां बयान कीं तो क़ौम की उम्मीदें आप से मुन्क़त़अ़ हो गईं और कहने लगे।

www.dawateislami.net

مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ ۫ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ

अपने पास से रह़मत बख़्शी[137] तो मुझे उस से कौन बचाएगा अगर मैं उस की ना फ़रमानी करूं[138] तो तुम मुझे सिवा नुक़्सान के कुछ न

تَخْسِيْرٍ ﴿٦٣﴾ وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ

बढ़ाओगे[139] और ऐ मेरी क़ौम येह अल्लाह का नाक़ा (ऊंटनी) है तुम्हारे लिये निशानी तो इसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में

اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿٦٤﴾ فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ

खाए और इसे बुरी त़रह़ हाथ न लगाना कि तुम को नज़्दीक अ़ज़ाब पहुंचेगा[140] तो उन्हों ने[141] उस की कूचें काटीं (पाउं काट दिये) तो सालेह़ ने कहा

تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ﴿٦٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ

अपने घरों में तीन दिन और बरत लो (फ़ाएदा उठा लो)[142] येह वा'दा है कि झूटा न होगा[143] फिर जब

اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ

हमारा हुक्म आया हम ने सालेह़ और उस के साथ के मुसल्मानों को अपनी रह़मत फ़रमा कर[144] बचा लिया और उस दिन की

يَوْمِئِذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿٦٦﴾ وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ

रुस्वाई से बेशक तुम्हारा रब क़वी इ़ज़्ज़त वाला है और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ लिया[145]

فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٦٧﴾ ۙ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَا

तो सुब्ह़ अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए गोया कभी यहां बसे ही न थे सुन लो बेशक समूद

كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ﴿٦٨﴾ ع وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ ع ٦ ٨

अपने रब से मुन्किर हुए अरे ला'नत हो समूद पर और बेशक हमारे फ़िरिश्ते इब्राहीम के पास[146]

بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿٦٩﴾

मुज़्दा ले कर आए बोले सलाम कहा[147] सलाम फिर कुछ देर न की, कि एक बछड़ा भुना ले आए[148]

137 : हिक्मत व नुबुव्वत अ़ता की। **138 :** रिसालत की तब्लीग़ और बुत परस्ती से रोकने में। **139 :** या'नी मुझे तुम्हारे ख़सारे का तजरिबा और ज़ियादा होगा। **140 :** समूद ने ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मो'जिज़ा त़लब किया था (जिस का बयान सूरए आ'राफ़ में हो चुका है)। आप ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की तो पथ्थर से ब हुक्मे इलाही नाक़ा पैदा हुवा, येह नाक़ा उन के लिये आयत (निशानी) व मो'जिज़ा था। इस आयत में उस नाक़ा (ऊंटनी) के मुतअ़ल्लिक़ अह़काम इर्शाद फ़रमाए गए कि इसे ज़मीन में चरने दो और कोई आज़ार (तक्लीफ़) न पहुंचाओ वरना दुन्या ही में गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब होगे और मोहलत न पाओगे। **141 :** हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त की और चहार शम्बा (बुध) को **142 :** या'नी जुमुआ़ तक जो कुछ दुन्या का ऐ़श करना है कर लो शम्बा (ह़फ़्ते) को तुम पर अ़ज़ाब आएगा। पहले रोज़ तुम्हारे चेहरे ज़र्द हो जाएंगे, दूसरे रोज़ सुर्ख़ और तीसरे रोज़ या'नी जुमुआ़ को सियाह और शम्बा को अ़ज़ाब नाज़िल हो जाएगा। **143 :** चुनान्चे ऐसा ही हुवा। **144 :** इन बलाओं से **145 :** या'नी होलनाक आवाज़ ने जिस की हैबत से उन के दिल फट गए और वोह सब के सब मर गए। **146 :** सादा रू नौ जवानों की ह़सीन शक्लों में ह़ज़रते इस्ह़ाक़ व ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِمَا السَّلَام की पैदाइश का **147 :** ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने **148 :** मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि ह़ज़रते

www.dawateislami.net

فَلَمَّا رَاٰۤ اَیْدِیَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَیْهِ نَكِرَهُمْ وَ اَوْجَسَ مِنْهُمْ خِیْفَةً ؕ قَالُوْا

फिर जब देखा कि उन के हाथ खाने की त़रफ़ नहीं पहुंचते उन को ऊपरी (अजनबी) समझा और जी ही जी में उन से डरने लगा बोले

لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ؕ(۷۰) وَ امْرَاَتُهٗ قَآىِٕمَةٌ فَضَحِكَتْ

डरिये नहीं हम क़ौमे लूत़ की त़रफ़[149] भेजे गए हैं और उस की बीबी[150] खड़ी थी वोह हंसने लगी

فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَ مِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ یَعْقُوْبَ(۷۱) قَالَتْ یٰوَیْلَتٰۤى ءَاَلِدُ

तो हम ने उसे[151] इस्ह़ाक़ की ख़ुश ख़बरी दी और इस्ह़ाक़ के पीछे[152] या'क़ूब की[153] बोली हाए ख़राबी क्या मेरे बच्चा होगा

وَ اَنَا عَجُوْزٌ وَّ هٰذَا بَعْلِیْ شَیْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ عَجِیْبٌ(۷۲) قَالُوْۤا

और मैं बूढ़ी हूं[154] और येह हैं मेरे शोहर बूढ़े[155] बेशक येह तो अचम्भे (तअ़ज्जुब) की बात है फ़िरिश्ते बोले

اَتَعْجَبِیْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَ بَرَكٰتُهٗ عَلَیْكُمْ اَهْلَ الْبَیْتِ ؕ

क्या अल्लाह के काम का अचम्भा (तअ़ज्जुब) करती हो अल्लाह की रह़मत और उस की बरकतें तुम पर ऐ इस घर वालो[156]

اِنَّهٗ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ(۷۳) فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِیْمَ الرَّوْعُ وَ جَآءَتْهُ الْبُشْرٰى

बेशक वोही है सब ख़ूबियों वाला इ़ज़्ज़त वाला फिर जब इब्राहीम का ख़ौफ़ ज़ाइल (दूर) हुवा और उसे ख़ुश ख़बरी मिली

یُجَادِلُنَا فِیْ قَوْمِ لُوْطٍ ؕ(۷۴) اِنَّ اِبْرٰهِیْمَ لَحَلِیْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِیْبٌ(۷۵) یٰۤاِبْرٰهِیْمُ

हम से क़ौमे लूत़ के बारे में झगड़ने लगा[157] बेशक इब्राहीम तह़म्मुल वाला बहुत आहें करने वाला रुजूअ़ लाने वाला है[158] ऐ इब्राहीम

इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِیْمَات बहुत ही मेहमान नवाज़ थे, बिग़ैर मेहमान के खाना तनावुल न फ़रमाते। उस वक़्त ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुवा कि पन्दरह रोज़ से कोई मेहमान न आया था, आप इस ग़म में थे, उन मेहमानों को देखते ही आप ने उन के लिये खाना लाने में जल्दी फ़रमाई, चूंकि आप के यहां गाएं ब कसरत थीं इस लिये बछड़े का भुना हुवा गोश्त सामने लाया गया। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि गाय का गोश्त ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِیْمَات के दस्तर ख़्वान पर ज़ियादा आता था और आप उस को पसन्द फ़रमाते थे, गाय का गोश्त खाने वाले अगर सुन्नते इब्राहीमी अदा करने की निय्यत करें तो मज़ीद सवाब पाएं। **149 :** अ़ज़ाब करने के लिये **150 :** ह़ज़रते सारह पसे पर्दा **151 :** उस के फ़रज़न्द **152 :** ह़ज़रते इस्ह़ाक़ के फ़रज़न्द **153 :** ह़ज़रते सारह को ख़ुश ख़बरी देने की वज्ह येह थी कि औलाद की ख़ुशी औ़रतों को मर्दों से ज़ियादा होती है और नीज़ येह भी सबब था कि ह़ज़रते सारह के कोई औलाद न थी और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़रज़न्द ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْهِ السَّلَام मौजूद थे, इस बिशारत के ज़िम्न में एक बिशारत येह भी थी कि ह़ज़रते सारह की उ़म्र इतनी दराज़ होगी कि वोह पोते को भी देखेंगी। **154 :** मेरी उ़म्र नव्वे से मुतजाविज़ हो चुकी है। **155 :** जिन की उ़म्र एक सो बीस साल की हो गई है। **156 :** फ़िरिश्तों के कलाम के मा'ना येह हैं कि तुम्हारे लिये क्या "जाए तअ़ज्जुब" (तअ़ज्जुब की बात) है ! तुम उस घर में हो जो मो'जिज़ात और ख़वारिक़े आ़दात (करामात) और अल्लाह तआ़ला की रह़मतों और बरकतों का मौरिद (मक़ामे नुज़ूल) बना हुवा है। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि बीबियां अहले बैत में दाख़िल हैं। **157 :** या'नी कलाम व सुवाल करने लगा और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मुजादला (तक्रार करना) येह था कि आप ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया कि क़ौमे लूत़ की बस्तियों में अगर पचास ईमानदार हों तो भी उन्हें हलाक करोगे ? फ़िरिश्तों ने कहा नहीं। फ़रमाया : अगर चालीस हों ? उन्हों ने कहा : जब भी नहीं। आप ने फ़रमाया : अगर तीस हों ? उन्हों ने कहा : जब भी नहीं। आप इस त़रह़ फ़रमाते रहे यहां तक कि आप ने फ़रमाया : अगर एक मर्द मुसल्मान मौजूद हो तब हलाक कर दोगे ? उन्हों ने कहा नहीं। तो आप ने फ़रमाया : उस में लूत़ عَلَیْهِ السَّلَام हैं। इस पर फ़िरिश्तों ने कहा : हमें मा'लूम है जो वहां हैं, हम ह़ज़रते लूत़ عَلَیْهِ السَّلَام को और उन

www.dawateislami.net

اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَ اِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ

इस ख़याल में न पड़ बेशक तेरे रब का हुक्म आ चुका और बेशक उन पर अ़ज़ाब आने वाला है

غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ﴿٧٦﴾ وَ لَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَ ضَاقَ بِهِمْ

कि फेरा न जाएगा और जब लूत़ के पास हमारे फ़िरिश्ते आए[159] उसे उन का ग़म हुवा और उन के सबब दिलतंग

ذَرْعًا وَّ قَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿٧٧﴾ وَ جَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ؕ

हुवा और बोला येह बड़ी सख़्ती का दिन है[160] और उस के पास उस की क़ौम दौड़ती आई

وَ مِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيْ هُنَّ

और उन्हें आगे ही से बुरे कामों की आ़दत पड़ी थी[161] कहा ऐ क़ौम येह मेरी क़ौम की बेटियां हैं येह

اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ لَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ؕ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ

तुम्हारे लिये सुथरी हैं तो अल्लाह से डरो[162] और मुझे मेरे मेहमानों में रुस्वा न करो क्या तुम में एक आदमी भी

رَّشِيْدٌ ﴿٧٨﴾ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَ اِنَّكَ لَتَعْلَمُ

नेक चलन नहीं बोले तुम्हें मा'लूम है कि तुम्हारी क़ौम की बेटियों में हमारा कोई ह़क़ नहीं[163] और तुम ज़रूर जानते हो

مَا نُرِيْدُ ﴿٧٩﴾ قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِيْٓ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ﴿٨٠﴾ قَالُوْا

जो हमारी ख़्वाहिश है बोला ऐ काश मुझे तुम्हारे मुक़ाबिल ज़ोर होता या किसी मज़बूत़ पाए की पनाह लेता[164] फ़िरिश्ते बोले

के घर वालों को बचाएंगे सिवाए उन की औ़रत के। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मक़्सद येह था कि आप अ़ज़ाब में ताख़ीर चाहते थे ताकि उस बस्ती वालों को कुफ़्र व मआ़सी से बाज़ आने के लिये एक फ़ुरसत और मिल जाए, चुनान्चे ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सिफ़त में इर्शाद होता है : **158** : इन सिफ़ात से आप की रिक़्क़ते क़ल्ब और आप की राफ़त व रह़मत मा'लूम होती है जो इस मुबाह़से का सबब हुई। फ़िरिश्तों ने कहा : **159** : ह़सीन सूरतों में। और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने उन की हैअत और जमाल को देखा तो क़ौम की ख़बासत व बद अ़मली का ख़याल कर के **160** : मरवी है कि मलाएका को हुक्मे इलाही येह था कि वोह क़ौमे लूत़ को उस वक़्त तक हलाक न करें जब तक कि ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ख़ुद उस क़ौम की बद अ़मली पर चार मरतबा गवाही न दें, चुनान्चे जब येह फ़िरिश्ते ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام से मिले तो आप ने उन से फ़रमाया कि क्या तुम्हें इस बस्ती वालों का ह़ाल मा'लूम न था ! फ़िरिश्तों ने कहा : इन का क्या ह़ाल है ? आप ने फ़रमाया : मैं गवाही देता हूं कि अ़मल के ए'तिबार से रूए ज़मीन पर येह बद तरीन बस्ती है और येह बात आप ने चार मरतबा फ़रमाई, ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औ़रत जो काफ़िरा थी निकली और उस ने अपनी क़ौम को जा कर ख़बर दी कि ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام के यहां ऐसे ख़ूबरू और ह़सीन मेहमान आए हैं जिन की मिस्ल अब तक कोई शख़्स नज़र नहीं आया। **161** : और कुछ शर्मो ह़या बाक़ी न रही थी। ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने **162** : और अपनी बीबियों से तमत्तोअ़ (फ़ाएदा ह़ासिल) करो कि येह तुम्हारे लिये ह़लाल है। ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन की औ़रतों को जो क़ौम की बेटियां थीं बुज़ुर्गाना शफ़्क़त से अपनी बेटियां फ़रमाया ताकि इस ह़ुस्ने अख़्लाक़ से वोह फ़ाएदा उठाएं और ह़मिय्यत (ग़ैरत) सीखें। **163** : या'नी हमें उन की त़रफ़ रग़बत नहीं। **164** : या'नी मुझे अगर तुम्हारे मुक़ाबले की ता़क़त होती या ऐसा क़बीला रखता जो मेरी मदद करता तो तुम से मुक़ाबला व मुक़ातला करता। ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने मकान का दरवाज़ा बन्द कर लिया था और अन्दर से येह गुफ़्तगू फ़रमा रहे थे, क़ौम ने चाहा कि दीवार तोड़े, फ़िरिश्तों ने आप का रन्जो इज़्तिराब देखा तो।

www.dawateislami.net

يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْۤا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ

ऐ लूत़ हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं[165] वोह तुम तक नहीं पहुंच सकते[166] तो अपने घर वालों को रातों रात ले जाओ

وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَاۤ اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ

और तुम में कोई पीठ फेर कर न देखे[167] सिवाए तुम्हारी औ़रत के उसे भी वोही पहुंचना है जो इन्हें पहुंचेगा[168] बेशक

مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ﴿۸۱﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا

इन का वा'दा सुब्ह के वक़्त है[169] क्या सुब्ह क़रीब नहीं फिर जब हमारा हुक्म आया हम ने

عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ﴿۸۲﴾

उस बस्ती के ऊपर को उस का नीचा कर दिया[170] और उस पर कंकर के पथ्थर लगातार बरसाए

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ؕ وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ﴿۸۳﴾ ع وَ اِلٰى مَدْيَنَ النصف ع ١٥

जो निशान किये हुए तेरे रब के पास हैं[171] और वोह पथ्थर कुछ ज़ालिमों से दूर नहीं[172] और[173] मद्यन की त़रफ़

اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ وَلَا

उन के हमक़ौम शुऐ़ब को[174] कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं[175] और

تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِنِّيْۤ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ وَّ اِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ

नाप और तोल में कमी न करो बेशक मैं तुम्हें आसूदा ह़ाल (मालदार व ख़ुशह़ाल) देखता हूं[176] और मुझे तुम पर

165 : तुम्हारा पाया मज़बूत़ है, हम इन लोगों को अ़ज़ाब करने के लिये आए हैं, तुम दरवाज़ा खोल दो और हमें और इन्हें छोड़ दो **166 :** और तुम्हें कुछ ज़रर नहीं पहुंचा सकते। ह़ज़रत ने दरवाज़ा खोल दिया, क़ौम के लोग मकान में घुस आए। ह़ज़रते जिब्रील ने ब हुक्मे इलाही अपना बाज़ू उन के मुंह पर मारा सब अन्धे हो गए और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मकान से निकल कर भागे, उन्हें रास्ता नज़र नहीं आता था और येह कहते जाते थे : हाए हाए लूत़ के घर में बड़े जादूगर हैं, उन्हों ने हमें जादू कर दिया। फ़िरिश्तों ने ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام से कहा : **167 :** इस त़रह़ आप के घर के तमाम लोग चले जाएं **168 :** ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : येह अ़ज़ाब कब होगा ? ह़ज़रते जिब्रील ने कहा : **169 :** ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा कि मैं तो इस से जल्दी चाहता हूं। ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : **170 :** या'नी उलट दिया इस त़रह़ कि ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ौमे लूत़ के शह़र जिस त़बक़ए ज़मीन पर थे उस के नीचे अपना बाज़ू डाला और उन पांचों शह़रों को जिन में सब से बड़ा सदूम था और उन में चार लाख आदमी बसते थे, इतना ऊंचा उठाया कि वहां के कुत्तों और मुर्ग़ों की आवाज़ें आस्मान पर पहुंचने लगीं और इस आहिस्तगी से उठाया कि किसी बरतन का पानी न गिरा और कोई सोने वाला बेदार न हुवा, फिर उस बुलन्दी से उस को औंधा कर के पलटा **171 :** उन पथ्थरों पर ऐसा निशान था जिस से वोह दूसरों से मुमताज़ थे। क़तादा ने कहा कि उन पर सुर्ख़ ख़ुत़ूत़ थे। ह़सन व सुद्दी का क़ौल है कि उन पर मोहरें लगी हुई थीं और एक क़ौल येह है कि जिस पथ्थर से जिस शख़्स की हलाकत मन्ज़ूर थी उस का नाम उस पथ्थर पर लिखा था। **172 :** या'नी अहले मक्का से। **173 :** हम ने भेजा बाशिन्दगाने शह़र **174 :** आप ने अपनी क़ौम से **175 :** पहले तो आप ने तौह़ीद व इ़बादत की हिदायत फ़रमाई कि वोह तमाम उमूर में सब से अहम है। इस के बा'द जिन आ़दाते क़बीह़ा में वोह मुब्तला थे उस से मन्अ़ फ़रमाया और इर्शाद किया **176 :** ऐसे ह़ाल में आदमी को चाहिये कि ने'मत की शुक्र गुज़ारी करे और दूसरों को अपने माल से फ़ाएदा पहुंचाए न कि उन के हुक़ूक़ में कमी करे, ऐसी ह़ालत में इस ख़ियानत की आ़दत से अन्देशा है कि कहीं इस ने'मत से महरूम न कर दिये जाओ।

www.dawateislami.net

عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ﴿٨٤﴾ وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَ

घेर लेने वाले दिन के अ़ज़ाब का डर है[177] और ऐ मेरी क़ौम नाप और तोल इन्साफ़ के साथ पूरी करो और

لَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٨٥﴾

लोगों को उन की चीज़ें घटा कर न दो और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो

بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿٨٦﴾

अल्लाह का दिया जो बच रहे वोह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम्हें यक़ीन हो[178] और मैं कुछ तुम पर निगहबान नहीं[179]

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ

बोले ऐ शुऐ़ब क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें येह हुक्म देती है कि हम अपने बाप दादा के ख़ुदाओं को छोड़ दें[180] या

نَّفْعَلَ فِيْٓ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ﴿٨٧﴾ قَالَ يٰقَوْمِ

अपने माल में जो चाहें न करें[181] हां जी तुम्हीं बड़े अ़क़्ल मन्द नेक चलन हो कहा ऐ मेरी क़ौम

اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ

भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की त़रफ़ से एक रोशन दलील पर हूं[182] और उस ने मुझे अपने पास से अच्छी रोज़ी दी[183]

وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ

और मैं नहीं चाहता हूं कि जिस बात से तुम्हें मन्अ़ करता हूं आप उस का ख़िलाफ़ करने लगूं[184] मैं तो जहां तक बने संवारना ही

مَا اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿٨٨﴾

चाहता हूं और मेरी तौफ़ीक़ अल्लाह ही की त़रफ़ से है मैं ने उसी पर भरोसा किया और उसी की त़रफ़ रुजूअ़ होता हूं

177 : कि जिस से किसी को रिहाई मुयस्सर न हो और सब के सब हलाक हो जाएं, येह भी हो सकता है कि इस दिन के अ़ज़ाब से अ़ज़ाबे आख़िरत मुराद हो। **178 :** या'नी माले ह़राम तर्क करने के बा'द ह़लाल जिस क़दर भी बचे वोही तुम्हारे लिये बेहतर है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि पूरा तोलने और नापने के बा'द जो बचे वोह बेहतर है। **179 :** कि तुम्हारे अफ़्आ़ल पर दारो गीर (मुआख़ज़ा) करूं। उ़लमा ने फ़रमाया कि बा'ज़ अम्बिया को ह़र्ब (जिहाद व क़िताल) की इजाज़त थी जैसे ह़ज़रते मूसा, ह़ज़रते दावूद, ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِمُ السَّلَام वग़ैरहुम, बा'ज़ वोह थे जिन्हें ह़र्ब (क़िताल) का हुक्म न था, ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام उन्हीं में से हैं, तमाम दिन वा'ज़ फ़रमाते और शब तमाम नमाज़ में गुज़ारते, क़ौम आप से कहती कि इस नमाज़ से आप को क्या फ़ाएदा ? आप फ़रमाते : नमाज़ ख़ूबियों का हुक्म देती है बुराइयों से मन्अ़ करती है, तो इस पर वोह तमस्ख़ुर से (मज़ाक़ उड़ाते हुए) येह कहते जो अगली आयत में मज़्कूर है। **180 :** बुत परस्ती न करें **181 :** मत़लब येह था कि हम अपने माल के मुख़्तार हैं, चाहे कम नापें चाहे कम तोलें। **182 :** बसीरत व हिदायत पर **183 :** या'नी नुबुव्वत व रिसालत या माले ह़लाल और हिदायत व मा'रिफ़त, तो येह कैसे हो सकता है कि मैं तुम्हें बुत परस्ती और गुनाहों से मन्अ़ न करूं क्यूं कि अम्बिया इसी लिये भेजे जाते हैं। **184 :** इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी عَلَیْہِ الرَّحْمَہ ने फ़रमाया कि क़ौम ने ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام के ह़लीम व रशीद होने का ए'तिराफ़ किया था और उन का येह कलाम इस्तिह़ज़ा (मज़ाक़) न था, बल्कि मुद्दआ़ येह था कि आप बा वुजूद ह़िल्म व कमाले अ़क़्ल के हम को अपने माल में अपने ह़स्बे मरज़ी तसर्रुफ़ करने से क्यूं मन्अ़ फ़रमाते हैं ? इस का जवाब जो ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया उस का ह़ासिल येह है कि जब तुम मेरे कमाले अ़क़्ल के मो'तरिफ़ हो तो तुम्हें येह समझ लेना चाहिये कि मैं ने अपने लिये जो

www.dawateislami.net

وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ

और ऐ मेरी क़ौम तुम्हें मेरी ज़िद येह न कमवा दे (बुरा काम करा दे) कि तुम पर पड़े जो पड़ा था नूह़ की क़ौम या

قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ﴿۸۹﴾ وَاسْتَغْفِرُوْا

हूद की क़ौम या सालेह़ की क़ौम पर और लूत़ की क़ौम तो कुछ तुम से दूर नहीं[185] और अपने रब से

رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ﴿۹۰﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا

मुआ़फ़ी चाहो फिर उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ बेशक मेरा रब मेह़रबान मह़ब्बत वाला है बोले ऐ शुऐ़ब

نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ

हमारी समझ में नहीं आतीं तुम्हारी बहुत सी बातें और बेशक हम तुम्हें अपने में कमज़ोर देखते हैं[186] और अगर तुम्हारा कुम्बा न होता[187]

لَرَجَمْنٰكَ ۖ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿۹۱﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ

तो हम ने तुम्हें पथराव कर दिया होता और कुछ हमारी निगाह में तुम्हें इ़ज़्ज़त नहीं कहा ऐ मेरी क़ौम क्या तुम पर मेरे कुम्बे का दबाव

مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

अल्लाह से ज़ियादा है[188] और उसे तुम ने अपनी पीठ पीछे डाल रखा[189] बेशक जो कुछ तुम करते हो सब मेरे रब के

مُحِيْطٌ ﴿۹۲﴾ وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ؕ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ

बस में है और ऐ क़ौम तुम अपनी जगह अपना काम किये जाओ मैं अपना काम करता हूं अब जाना (जानना) चाहते हो

مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ؕ وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ

किस पर आता है वोह अ़ज़ाब कि उसे रुस्वा करेगा और कौन झूटा है[190] और इन्तिज़ार करो[191] मैं भी तुम्हारे साथ

رَقِيْبٌ ﴿۹۳﴾ وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ

इन्तिज़ार में हूं और जब[192] हमारा हुक्म आया हम ने शुऐ़ब और उस के साथ के मुसल्मानों को अपनी रह़मत फ़रमा कर

बात पसन्द की है वोह वोही होगी जो सब से बेहतर हो और वोह ख़ुदा की तौह़ीद और नाप तोल में तर्के ख़ियानत है, मैं इस का पाबन्दी से आ़मिल हूं तो तुम्हें समझ लेना चाहिये कि येही त़रीक़ा बेहतर है। **185 :** उन्हें कुछ ज़ियादा ज़माना नहीं गुज़रा है न वोह कुछ दूर के रहने वाले थे तो उन के ह़ाल से इ़ब्रत ह़ासिल करो। **186 :** कि अगर हम आप के साथ कुछ ज़ियादती करें तो आप में मुदाफ़अ़त की त़ाक़त नहीं। **187 :** जो दीन में हमारा मुवाफ़िक़ है और जिस को हम अ़ज़ीज़ रखते हैं। **188 :** कि अल्लाह के लिये तो तुम मेरे क़त्ल से बाज़ न रहे और मेरे कुम्बे की वज्ह से बाज़ रहे और तुम ने अल्लाह के नबी का तो एह़तिराम न किया और कुम्बे का एह़तिराम किया। **189 :** और उस के हुक्म की कुछ परवाह न की। **190 :** अपने दआ़वी (दा'वों) में या'नी तुम्हें जल्द मा'लूम हो जाएगा कि मैं ह़क़ पर हूं या तुम और अ़ज़ाबे इलाही से शक़ी की शक़ावत (बद बख़्त की बद बख़्ती) ज़ाहिर हो जाएगी। **191 :** आ़क़िबते अम्र और अन्जामे कार का **192 :** उन के अ़ज़ाब और हलाक के लिये।

www.dawateislami.net

مِّنَّا ۚ وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩٤﴾

बचा लिया और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ लिया[193] तो सुब्ह अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿٩٥﴾ ع وَلَقَدْ

गोया कभी वहां बसे ही न थे अरे दूर हों मद्यन जैसे दूर हुए समूद[194] और बेशक

اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٦﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ

हम ने मूसा को अपनी आयतों[195] और सरीह़ ग़लबे के साथ फ़िरऔ़न और उस के दरबारियों की त़रफ़ भेजा

فَاتَّبَعُوْۤا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَاۤ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿٩٧﴾ يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ

तो वोह फ़िरऔ़न के कहने पर चले[196] और फ़िरऔ़न का काम रास्ती (दुरुस्त व दियानत दारी) का न था[197] अपनी क़ौम के आगे होगा क़ियामत के

الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ؕ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ﴿٩٨﴾ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ

दिन तो उन्हें दोज़ख़ में ला उतारेगा[198] और वोह क्या ही बुरा घाट उतरने का और उन के पीछे पड़ी इस जहान में

لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ﴿٩٩﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى

ला'नत और क़ियामत के दिन[199] क्या ही बुरा इन्आ़म जो उन्हें मिला येह बस्तियों[200] की ख़बरें हैं

نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ﴿١٠٠﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْۤا

कि हम तुम्हें सुनाते हैं[201] उन में कोई खड़ी है[202] और कोई कट गई[203] और हम ने उन पर ज़ुल्म न किया बल्कि ख़ुद उन्हों ने[204]

اَنْفُسَهُمْ فَمَاۤ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ

अपना बुरा किया तो उन के मा'बूद जिन्हें[205] अल्लाह के सिवा पूजते थे उन के कुछ काम न

193 : ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने हैबत नाक आवाज़ से कहा : "مُوْتُوْا جَمِيْعًا" सब मर जाओ ! इस आवाज़ की दहशत से उन के दम निकल गए और सब मर गए। **194 :** अल्लाह की रह़मत से। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि कभी दो उम्मतें एक ही अ़ज़ाब में मुब्तला नहीं की गईं बजुज़ ह़ज़रते शुऐ़ब व सालेह़ عَلَيْهِمَا السَّلَام की उम्मतों के, लेकिन क़ौमे सालेह़ को उन के नीचे से होलनाक आवाज़ ने हलाक किया और क़ौमे शुऐ़ब को ऊपर से। **195 :** या'नी मो'जिज़ात **196 :** और कुफ़्र में मुब्तला हुए और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान न लाए। **197 :** वोह खुली गुमराही में था क्यूं कि बा वुजूद बशर होने के ख़ुदाई का दा'वा करता था और अ़लानिया ऐसे ज़ुल्म और ऐसी सितम गारियां करता था जिस का शैत़ानी काम होना ज़ाहिर और यक़ीनी है, वोह कहां और ख़ुदाई कहां ! और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ रुश्दो ह़क़्क़ानिय्यत थी, आप की सच्चाई की दलीलें, आयाते ज़ाहिरा व मो'जिज़ाते बाहिरा (साफ़ साफ़ आयतें और ज़बर दस्त मो'जिज़ात) वोह लोग मुआ़यना कर चुके थे, फिर भी उन्हों ने आप की इत्तिबाअ़ से मुंह फेरा और ऐसे गुमराह की इत़ाअ़त की, तो जब वोह दुन्या में कुफ़्रो ज़लाल में अपनी क़ौम का पेश्वा था ऐसे ही जहन्नम में उन का इमाम होगा और **198 :** जैसा कि उन्हें दरियाए नील में ला डाला था। **199 :** या'नी दुन्या में भी मल्ऊ़न और आख़िरत में भी मल्ऊ़न। **200 :** या'नी गुज़री हुई उम्मतों **201 :** कि तुम अपनी उम्मत को उन की ख़बरें दो ताकि वोह उन से इ़ब्रत ह़ासिल करें, उन बस्तियों की ह़ालत खेतियों की त़रह़ है कि **202 :** उस के मकानों की दीवारें मौजूद हैं, खन्डर पाए जाते हैं, निशान बाक़ी हैं जैसे कि आ़द व समूद के दियार (बस्तियां)। **203 :** या'नी कटी हुई खेती की त़रह़ बिल्कुल बे नामो निशान हो गई और उस का कोई असर बाक़ी न रहा जैसे कि क़ौमे नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام के दियार। **204 :** कुफ़्र व मआ़सी का इरतिकाब कर के **205 :** जह्ल व गुमराही से

www.dawateislami.net

شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ﴿۱۰۱﴾ وَكَذٰلِكَ اَخْذُ

आए[206] जब तुम्हारे रब का हुक्म आया और उन[207] से उन्हें हलाक के सिवा कुछ न बढ़ा और ऐसी ही पकड़ है

رَبِّكَ اِذَاۤ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗۤ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ﴿۱۰۲﴾ اِنَّ

तेरे रब की जब बस्तियों को पकड़ता है उन के ज़ुल्म पर बेशक उस की पकड़ दर्दनाक करीं (सख़्त) है[208] बेशक

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ

इस में निशानी[209] है उस के लिये जो आख़िरत के अ़ज़ाब से डरे वोह दिन है जिस में सब लोग[210]

النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿۱۰۳﴾ وَمَا نُؤَخِّرُهٗۤ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ﴿۱۰۴﴾

इकठ्ठे होंगे और वोह दिन हाज़िरी का है[211] और हम उसे[212] पीछे नहीं हटाते मगर एक गिनी हुई मुद्दत के लिये[213]

يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ﴿۱۰۵﴾ فَاَمَّا

जब वोह दिन आएगा कोई बे हुक्मे ख़ुदा बात न करेगा[214] तो उन में कोई बद बख़्त है और कोई ख़ुश नसीब[215] तो

الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ﴿۱۰۶﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

वोह जो बद बख़्त हैं वोह तो दोज़ख़ में हैं वोह उस में गधे की त़रह़ रैंकें (चीख़ें चिल्लाएं)गे वोह उस में रहेंगे

مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ

जब तक आस्मान व ज़मीन रहें मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा[216] बेशक तुम्हारा रब

لِّمَا يُرِيْدُ ﴿۱۰۷﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِي الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ

जब जो चाहे करे और वोह जो ख़ुश नसीब हुए वोह जन्नत में हैं हमेशा उस में रहेंगे जब तक

السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿۱۰۸﴾

आस्मान व ज़मीन रहें मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा[217] येह बख़्शिश है कभी ख़त्म न होगी

206 : और एक शम्मा (थोड़ा सा भी) अ़ज़ाब दफ़्अ़ न कर सके। **207 :** बुतों और झूटे मा'बूदों **208 :** तो हर ज़ालिम को चाहिये कि इन वाक़िआ़त से इ़ब्रत पकड़े और तौबा में जल्दी करे। **209 :** इ़ब्रत व नसीह़त **210 :** अगले पिछले हिसाब के लिये **211 :** जिस में आस्मान वाले और ज़मीन वाले सब ह़ाज़िर होंगे। **212 :** या'नी रोज़े क़ियामत को **213 :** या'नी जो मुद्दत हम ने बक़ाए दुन्या के लिये मुक़र्रर फ़रमाई है उस के तमाम होने तक। **214 :** तमाम ख़ल्क़ साकित होगी, क़ियामत का दिन बहुत त़वील होगा, उस में अह़वाल मुख़्तलिफ़ होंगे, बा'ज़ अह़वाल में तो शिद्दते हैबत से किसी को बे इज़्ने इलाही बात ज़बान पर लाने की क़ुदरत न होगी और बा'ज़ अह़वाल में इज़्न दिया जाएगा कि लोग इज़्न (इजाज़त) से कलाम करेंगे और बा'ज़ अह़वाल में होल व दहशत कम होगी उस वक़्त लोग अपने मुआ़मलात में झगड़ेंगे और अपने मुक़द्दमात पेश करेंगे। **215 :** शक़ीक़ बल्ख़ी قُدِّسَ سِرُّہٗ ने फ़रमाया : सआ़दत की पांच अ़लामतें हैं : (1) दिल की नरमी (2) कस्रते गिर्या (3) दुन्या से नफ़रत (4) उम्मीदों का कोताह होना (5) ह़या। और बद बख़्ती की अ़लामतें भी पांच चीज़ें हैं : (1) दिल की सख़्ती (2) आंख की ख़ुश्की या'नी अ़दमे गिर्या (न रोना) (3) दुन्या की रग़बत (4) दराज़ उम्मीदें (5) बे ह़याई। **216 :** इतना और ज़ियादा रहेंगे और

www.dawateislami.net

فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ

तो ऐ सुनने वाले धोके में न पड़ उस से जिसे येह काफ़िर पूजते हैं[218] येह वैसा ही पूजते हैं जैसा पहले

اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَ اِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿۱۰۹﴾ وَ لَقَدْ ع ١٤

इन के बाप दादा पूजते थे[219] और बेशक हम इन का हिस्सा इन्हें पूरा फेर देंगे जिस में कमी न होगी और बेशक

اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَ لَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ

हम ने मूसा को किताब दी[220] तो उस में फूट पड़ गई[221] अगर तुम्हारे रब की एक बात[222] पहले न हो चुकी होती

لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿۱۱۰﴾ وَ اِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ

तो जभी उन का फ़ैसला कर दिया जाता[223] और बेशक वोह उस की तरफ़ से[224] धोका डालने वाले शक में हैं[225] और बेशक जितने हैं[226] एक एक को

رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۱۱۱﴾ فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَ

तुम्हारा रब उस का अमल पूरा भर देगा उसे उन के कामों की ख़बर है[227] तो क़ाइम रहो[228] जैसा तुम्हें हुक्म है और

مَنْ تَابَ مَعَكَ وَ لَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۱۲﴾ وَ لَا تَرْكَنُوْٓا

जो तुम्हारे साथ रुजूअ़ लाया है[229] और ऐ लोगो सरकशी न करो बेशक वोह तुम्हारे काम देख रहा है और ज़ालिमों की तरफ़

اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ

न झुको[230] कि तुम्हें आग छूएगी और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई हिमायती नहीं[231]

इस ज़ियादती की कोई इन्तिहा नहीं, तो मा'ना येह हुए कि हमेशा रहेंगे, कभी इस से रिहाई न पाएंगे। (جلالین) **217 :** इतना और ज़ियादा रहेंगे। इस ज़ियादती की कुछ इन्तिहा नहीं इस से हमेशगी मुराद है चुनान्चे इर्शाद फ़रमाता है : **218 :** बेशक येह इस बुत परस्ती पर अ़ज़ाब दिये जाएंगे जैसे कि पहली उम्मतें मुब्तलाए अ़ज़ाब हुईं। **219 :** और तुम्हें मा'लूम हो चुका कि उन का क्या अन्जाम होगा। **220 :** या'नी तौरैत। **221 :** बा'ज़े उस पर ईमान लाए और बा'ज़ ने कुफ़्र किया। **222 :** कि इन के हिसाब में जल्दी न फ़रमाएगा। मख़्लूक़ के हिसाब व जज़ा का दिन रोज़े क़ियामत है। **223 :** और दुन्या ही में गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब किये जाते। **224 :** या'नी आप की उम्मत के कुफ़्फ़ार क़ुरआने करीम की तरफ़ से। **225 :** जिस ने उन की अ़क़्लों को हैरान कर दिया है। **226 :** तमाम ख़ल्क़, तस्दीक़ करने वाले हों या तक्ज़ीब करने वाले रोज़े क़ियामत **227 :** उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं। इस में नेकों और तस्दीक़ करने वालों के लिये तो बिशारत है कि वोह नेकी की जज़ा पाएंगे और काफ़िरों और तक्ज़ीब करने वालों के लिये वईद है कि वोह अपने अ़मल की सज़ा में गिरिफ़्तार होंगे। **228 :** अपने रब के हुक्म और उस के दीन की दा'वत पर **229 :** और उस ने तुम्हारा दीन क़बूल किया है, वोह दीन व ताअ़त पर क़ाइम रहे। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है : सुफ़्यान बिन अ़ब्दुल्लाह सक़फ़ी ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि मुझे दीन में एक ऐसी बात बता दीजिये कि फिर किसी से दरयाफ़्त करने की हाजत न रहे। फ़रमाया : "اٰمَنْتُ بِاللّٰه" कह और क़ाइम रह। **230 :** "किसी की तरफ़ झुकना" उस के साथ मेल महब्बत रखने को कहते हैं, अबुल आ़लिया ने कहा कि मा'ना येह हैं कि ज़ालिमों के आ'माल से राज़ी न हो। सुद्दी ने कहा : उन के साथ मुदाहनत (बा वुजूदे क़ुदरत उन के सामने दीन में पिलपिला पन इख़्तियार) न करो। क़तादा ने कहा : मुश्रिकीन से न मिलो। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि ख़ुदा के ना फ़रमानों के साथ या'नी काफ़िरों और बे दीनों और गुमराहों के साथ मेलजोल, रस्मो राह, मवद्दत (प्यार) व महब्बत, उन की हां में हां मिलाना, उन की ख़ुशामद में रहना मम्नूअ़ है। **231 :** कि तुम्हें उस के अ़ज़ाब से बचा सके। येह हाल तो उन का है जो ज़ालिमों से रस्मो राह मेल व महब्बत रखें और इसी से उन का हाल क़ियास करना चाहिये जो ख़ुद ज़ालिम हैं।

www.dawateislami.net

ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ؕ اِنَّ

फिर मदद न पाओगे और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों किनारों[232] और कुछ रात के हिस्सों में[233] बेशक

الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ﴿١١٤﴾ۚ وَاصْبِرْ فَاِنَّ

नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं[234] येह नसीहत है नसीहत मानने वालों को और सब्र करो कि

اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٥﴾ فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ

अल्लाह नेकों का नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करता तो क्यूं न हुए तुम में से अगली संगतों (क़ौमों) में[235] ऐसे जिन में

اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِى الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا

भलाई का कुछ हिस्सा लगा रहा होता कि ज़मीन में फ़साद से रोकते[236] हां उन में थोड़े थे वोही जिन को हम ने नजात

مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَاۤ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿١١٦﴾ وَ

दी[237] और ज़ालिम उसी ऐश के पीछे पड़े रहे जो उन्हें दिया गया[238] और वोह गुनहगार थे और

مَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿١١٧﴾ وَلَوْ شَآءَ

तुम्हारा रब ऐसा नहीं कि बस्तियों को बे वज्ह हलाक कर दे और उन के लोग अच्छे हों और अगर

رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿١١٨﴾ۙ اِلَّا مَنْ

तुम्हारा रब चाहता तो सब आदमियों को एक ही उम्मत कर देता[239] और वोह हमेशा इख़्तिलाफ़ में रहेंगे[240] मगर जिन

رَّحِمَ رَبُّكَ ؕ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ؕ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ

पर तुम्हारे रब ने रह़्म किया[241] और लोग इसी लिये बनाए हैं[242] और तुम्हारे रब की बात पूरी हो चुकी कि बेशक ज़रूर जहन्नम भर दूंगा

---

232 : दिन के दो किनारों से सुब्ह़ व शाम मुराद हैं। ज़वाल से क़ब्ल का वक़्त सुब्ह़ में और बा'द का शाम में दाख़िल है। सुब्ह़ की नमाज़ "फ़ज्र" और शाम की नमाज़ "ज़ोहर व अ़स्र" हैं। 233 : और रात के हिस्सों की नमाज़ें "मग़रिब व इ़शा" हैं। 234 : नेकियों से मुराद या येही पन्जगाना नमाज़ें हैं जो आयत में ज़िक्र हुईं या मुत्लक़ ता़अ़तें या "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ" पढ़ना। **मस्अला :** आयत से मा'लूम हुवा कि नेकियां सग़ीरा गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा होती हैं ख़्वाह वोह नेकियां नमाज़ हों या सदक़ा या ज़िक्र व इस्तिग़्फ़ार या और कुछ। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि पांचों नमाज़ें और जुमुआ़ दूसरे जुमुआ़ तक और एक रिवायत में है कि रमज़ान दूसरे रमज़ान तक येह सब कफ़्फ़ारा हैं उन गुनाहों के लिये जो इन के दरमियान वाक़ेअ़ हों जब कि आदमी कबीरा गुनाहों से बचे। **शाने नुज़ूल :** एक शख़्स ने किसी औ़रत को देखा और उस से कोई ख़फ़ीफ़ सी ह़रकत बे ह़िजाबी की सरज़द हुई इस पर वोह नादिम हुवा और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अपना ह़ाल अ़र्ज़ किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया कि सग़ीरा गुनाहों के लिये नेकियों का कफ़्फ़ारा होना क्या ख़ास मेरे लिये है ? फ़रमाया : नहीं, सब के लिये। 235 : या'नी पहली उम्मतों में जो हलाक की गईं। 236 : मा'ना येह हैं कि उन उम्मतों में ऐसे अहले ख़ैर नहीं हुए जो लोगों को ज़मीन में फ़साद करने से रोकते और गुनाहों से मन्अ़ करते, इसी लिये हम ने उन्हें हलाक कर दिया। 237 : वोह अम्बिया पर ईमान लाए, उन के अह़काम पर फ़रमां बरदार रहे और लोगों को फ़साद से रोकते रहे। 238 : और तनअ़्उ़म व तलज़्ज़ुज़ (ऐश व लज़्ज़ात) और ख़्वाहिशात व शहवात के आ़दी हो गए और कुफ़्र व मआ़सी में डूबे रहे। 239 : तो सब एक दीन पर होते 240 : कोई किसी दीन पर कोई किसी पर 241 : वोह दीने ह़क़ पर मुत्तफ़िक़ रहेंगे और इस में इख़्तिलाफ़

www.dawateislami.net

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١١٩﴾ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ

जिन्नों और आदमियों को मिला कर[243] और सब कुछ हम तुम्हें रसूलों की ख़बरें सुनाते हैं

مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى

जिस से तुम्हारा दिल ठहराएं[244] और इस सूरत में तुम्हारे पास हक़ आया[245] और मुसल्मानों को

لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا

पन्दो नसीहत[246] और काफ़िरों से फ़रमाओ तुम अपनी जगह काम किये जाओ[247] हम अपना

عٰمِلُوْنَ ﴿١٢١﴾ ۙ وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَ

काम करते हैं[248] और राह देखो हम भी राह देखते हैं[249] और अल्लाह ही के लिये हैं आस्मानों और

الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ

ज़मीन के ग़ैब[250] और उसी की तरफ़ सब कामों की रुजूअ़ है तो उस की बन्दगी करो और उस पर भरोसा रखो और तुम्हारा रब

بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٣﴾ ع ١٤ ١٠

तुम्हारे कामों से ग़ाफ़िल नहीं

اٰیاتها ١١١ | ١٢ سُوْرَةُ يُوْسُفَ مَكِّيَّةٌ ٥٣ | رکوعاتها ١٢

सूरए यूसुफ़ मक्किय्या है, इस में एक सो ग्यारह आयतें और बारह रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़्म वाला[1]

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿١﴾ ۚ اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ

येह रोशन किताब की आयतें हैं[2] बेशक हम ने इसे अ़रबी क़ुरआन उतारा

न करेंगे। **242 :** या'नी इख़्तिलाफ़ वाले इख़्तिलाफ़ के लिये और रह़मत वाले इत्तिफ़ाक़ के लिये। **243 :** क्यूं कि उस को इल्म है कि बातिल के इख़्तियार करने वाले बहुत होंगे। **244 :** और अम्बिया के ह़ाल और उन की उम्मतों के सुलूक देख कर आप को अपनी क़ौम की ईज़ा का बरदाश्त करना और उस पर सब्र फ़रमाना आसान हो। **245 :** और अम्बिया और उन की उम्मतों के तज़्किरे वाक़ेअ़ के मुत़ाबिक़ बयान हुए जो दूसरी किताबों और दूसरे लोगों को ह़ासिल नहीं या'नी जो वाक़िआ़त बयान फ़रमाए गए वोह ह़क़ भी हैं। **246 :** भी, कि गुज़री हुई उम्मतों के ह़ालात और उन के अन्जाम से इ़ब्रत ह़ासिल करें। **247 :** अ़न्क़रीब इस का नतीजा पा लोगे। **248 :** जिस का हमें हमारे रब ने हुक्म दिया। **249 :** तुम्हारे अन्जामे कार की। **250 :** उस से कुछ छुप नहीं सकता। **1 :** सूरए यूसुफ़ मक्किय्या है इस में बारह रुकूअ़ और एक सो ग्यारह आयतें और एक हज़ार छ[6] सो कलिमे और सात हज़ार एक सो छियासठ ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** उ़लमाए यहूद ने अशराफ़े अ़रब से कहा था कि सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त करो कि औलादे ह़ज़रते या'क़ूब मुल्के शाम से मिस्र में किस त़रह़ पहुंची और उन के वहां जा कर आबाद होने का क्या सबब हुवा और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات का वाक़िआ़

www.dawateislami.net